विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachaar
विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 19 | अंक: 72 | दिसंबर, 2025

हिंदी दिवस 2025

हिंदी दिवस पूरे विश्व में अब केवल एक तिथि तक सीमित नहीं रही है। इस अवसर पर हिंदी प्रेमी विश्व भर में हिंदी की गरिमा का गुणगान करते हैं। अब यू.एन. में भी हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया जाता है। हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित गतिविधियों की रिपोर्ट इस अंक में पढ़ें।

पृ. 2-3

फ़िजी में राष्ट्रीय मानक हिंदी सम्मेलन

6 दिसंबर, 2025 को हिंदी परिषद् फ़िजी द्वारा फ़िजी विश्वविद्यालय के सामाबुला कैम्पस में राष्ट्रीय मानक हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन भारतीय उच्चायुक्त, फ़िजी महामहिम श्री सुनीत मेहता द्वारा किया गया। डॉ. सुभाषिणी कुमार ने फ़िजी नेशनल यूनिवर्सिटी का प्रतिनिधित्व करते हुए शैक्षणिक वक्ता के रूप में भाग लिया।

पृ. 5

हिंदी पक्षोत्सव

अक्टूबर 2025 में भारत पर्यावास केंद्र के भारत बोध केंद्र के अंतर्गत नवगठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा गुलमोहर सभागार, नई दिल्ली में हिंदी पक्षोत्सव का समापन समारोह आयोजित हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता केंद्र के निदेशक प्रो. (डॉ.) के. जी. सुरेश ने की

पृ. 5

'दुनिया काठ की' का लोकार्पण

28 दिसंबर, 2025 को वामा साहित्य मंच द्वारा आयोजित समारोह में प्रसिद्ध लेखिका एवं मंच की अध्यक्ष श्रीमती ज्योति जैन के नवीन काव्य-संग्रह 'दुनिया काठ की' का विमोचन सम्पन्न हुआ। यह लेखिका की 17वीं पुस्तक है, जिसमें 51 कविताओं के माध्यम से जीवन, परंपरा और मानवीय संवेदनाओं का सशक्त चित्रण है।

पृ. 10

इफ़को साहित्य सम्मान 2025

30 दिसंबर, 2025 को नई दिल्ली के कमानी सभागार में आयोजित समारोह में उर्वरक क्षेत्र की प्रमुख सहकारी संस्था इफ़को ने वर्ष 2025 का 'इफ़को साहित्य सम्मान' वरिष्ठ कथाकार मैत्रेयी पुष्पा को सृजनशील अभिव्यक्ति के प्रति उनके योगदान के लिए प्रदान किया। साथ ही, 'इफ़को युवा साहित्य सम्मान 2025' लेखिका अंकिता जैन को दिया गया।

पृ. 12

श्रद्धांजलि

हिंदी जगत् ने इस वर्ष 102 वर्षीय साहित्यकार प्रो. रामदरश मिश्र, प्रख्यात रचनाकार श्री विनोद कुमार शुक्ल, वरिष्ठ नाटककार और पद्मश्री से सम्मानित श्री दया प्रकाश सिन्हा, त्रिनिदाद एवं टोबैगो की प्रतिष्ठित हिंदी विदुषी सुश्री कमला रामलखन तथा ऑस्ट्रेलिया की पत्रकार, प्रकाशक, संस्थापक और हिंदी शिक्षिका नीना बधवार जैसे अनमोल रत्नों को खो दिया।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

पृ. 14-15

इस अंक में आगे पढ़ें :

- *हिंदी दिवस 2025* — *पृ. 2-3*
- *संगोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशाला, जयंती, उत्सव* — *पृ. 3-8*
- *आभासी कार्यक्रम* — *पृ. 8-9*
- *साक्षात्कार* — *पृ.9-10*
- *लोकार्पण* — *पृ. 10-11*
- *सम्मान एवं पुरस्कार* — *पृ. 11-14*
- *श्रद्धांजलि* — *पृ. 14 -15*
- *संपादकीय* — *पृ. 16*

ISSN 1694-2485

हिंदी दिवस 2025

'वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली आवाज़ों को मंच मुहैया कराती है हिंदी'

9 अक्टूबर, 2025 को न्यूयॉर्क स्थित यूएन मुख्यालय में भारतीय मिशन के सहयोग से हिंदी के महत्त्व को उजागर करने के लिए हिंदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक संचार विभाग की तरफ़ से एक निदेशक एवं संयुक्त राष्ट्र की नीतियों व कामकाज को दुनिया तक पहुँचाने के अभियान की सक्रिय सदस्य नैनेट ब्राउन ने बताया कि हिंदी भाषा दुनिया भर में विविधता से भरे दृष्टिकोणों को आपस में जोड़ती है और वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली आवाज़ों को मंच मुहैया कराती है। सोशल मीडिया मंचों पर संयुक्त राष्ट्र की बहुभाषाई मौजूदगी बढ़ाने के लिए, 2018 में हिंदी में सोशल मीडिया मंच शुरू किए गए, जिसके बाद जनवरी 2019 में, यूएन न्यूज़ हिंदी की वेबसाइट भी शुरू हुई। नैनेट ब्राउन ने कहा कि हिंदी में सोशल मीडिया मंच और समाचार वेबसाइट, संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक कामकाज से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ समय पर प्रसारित व प्रकाशित करते हैं। यूएन हिंदी के मंचों के साथ जुड़े पाठकों व सामग्री प्रयोक्ताओं में बड़ी संख्या 18 वर्ष से 34 वर्ष के बीच की आयु के लोगों की है।

"चूँकि यूएन हिंदी की सामग्री को अधिकतर लोग मोबाइल माध्यमों पर देखते हैं, इसलिए उनकी रुचि को ध्यान में रखते हुए, हाल ही में व्हाट्सएप्प चैनल भी शुरू किया गया है।"

नैनेट ब्राउन ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र के हिंदी सोशल मीडिया मंचों और समाचार वेबसाइट की पहुँच लगातार बढ़ रही है।

"निष्कर्षतः संयुक्त राष्ट्र का वैश्विक संचार विभाग, प्रयोक्ताओं की इस रुचि की अहमियत को समझते हुए, संयुक्त राष्ट्र की मुख्य प्राथमिकताओं के बारे में सटीक जानकारी तेज़ी से मुहैया कराने के लिए प्रतिबद्ध है।"

संयुक्त राष्ट्र में भारत के स्थाई प्रतिनिधि राजदूत पी. हरीश ने संचार और संवाद में हिंदी के बढ़ते प्रयोग की तरफ़ ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि हिंदी सांस्कृतिक विरासत और एकता की अभिव्यक्ति का माध्यम है।

भारत से आए एक प्रतिनिधिमंडल के अध्यक्ष सांसद पीपी चौधरी ने कहा कि हिंदी सबको जोड़ने वाली भाषा है। नेपाल के स्थायी प्रतिनिधि लोक बहादुर थापा ने कहा कि हिंदी भारत और नेपाल के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करती है। सूरीनाम के राजदूत सुनील अलग्राम सिटलदिन ने बताया कि उनके देश में हिंदी पाँच पीढ़ियों से संरक्षित है और स्थानीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। मॉरीशस के राजदूत मिलन मीतरभान ने भारत और मॉरीशस के बीच गहरे सांस्कृतिक संबंधों को रेखांकित किया। अंडोरा के राजदूत जोन रोविना ने संयुक्त राष्ट्र में बहुभाषावाद को बढ़ाने हेतु भारत-अंडोरा सहयोग की सराहना की। त्रिनिदाद और टोबैगो के स्थायी प्रतिनिधि नील पार्सन ने कहा कि हिंदी राष्ट्र की आवाज़ है।

साभार : यू.एन. न्यूज़ / न्यू इंडिया अब्रोड

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस द्वारा हिंदी सप्ताह का आयोजन

6-15 अक्टूबर, 2025 तक महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा हिंदी सप्ताह का आयोजन हुआ।

11 सितंबर, 2025 को हिंदी सप्ताह का शुभारम्भ नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता से हुआ। मुख्य अतिथि एवं निर्णायक मंडल की सदस्या के रूप में भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव (हिंदी एवं संस्कृति), सुश्री श्रुति पाठक उपस्थित थीं। निर्णायक मंडल के अन्य सदस्य डॉ. शशि दुकन एवं श्री राजीव सितोहल रहे। प्रथम पुरस्कार बी.ए. हिंदी तृतीय वर्ष को, द्वितीय पुरस्कार बी.ए. हिंदी प्रथम वर्ष तथा तृतीय पुरस्कार बी.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष के छात्रों को मिला। सर्वश्रेष्ठ अभिनेता पुरस्कार बी.ए. तृतीय वर्ष के कृष्णरेन लचा को, सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री पुरस्कार बी.ए. प्रथम वर्ष की जगू मातृका को एवं द्वितीय सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री पुरस्कार द्वितीय वर्ष की रुद्राणी देवी मोहाबीर को प्राप्त हुआ। श्रेष्ठ लेखन पुरस्कार प्रथम वर्ष के मिलिंद कुमार बिखारी को दिया गया।

6 अक्टूबर, 2025 को स्वरचित कविता वाचन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि तथा निर्णायक मंडल की सदस्या के रूप में हिंदी साहित्य भूषण, कवयित्री, समीक्षक एवं पूर्व प्राचार्या, डॉ. शारदा प्रसाद उपस्थित थीं। निर्णायक मंडल के सदस्य वरिष्ठ व्याख्याता एवं भारतीय अध्ययन संकायाध्यक्ष श्री गंगाधरसिंह सुखलाल एवं एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. राजरानी गोबिन रहीं। बी.ए. हिंदी तृतीय वर्ष की नीलिमा ऋतुराज प्रथम स्थान पर आई, बी.ए. हिंदी तृतीय वर्ष की सिमरन धूजीत द्वितीय स्थान पर और बी.ए. हिंदी प्रथम वर्ष के लोकव्यास राज उपिया तृतीय स्थान पर आए। बी.ए. प्रथम वर्ष की आकांक्षा रानलौल और पी.जी.सी.ई. के लविश सिंह रघुआ को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

8 अक्टूबर, 2025 को आशुवाक् प्रतिस्पर्धा हुई। कार्यक्रम में महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका, डॉ. विद्योत्मा कुंजल उपस्थित थीं। निर्णायक मंडल के सदस्य के रूप में विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र, संस्थान के हिंदी पीठ, प्रो. राजशेखर एवं संस्थान के सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग की अध्यक्षा व वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. अंजलि चिंतामणि उपस्थित रहीं। बी.ए. प्रथम वर्ष के मिलिंद कुमार बिखारी ने पहला पुरस्कार, बी.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष की शिवानी दूलम ने दूसरा पुरस्कार और बी.ए. हिंदी तृतीय वर्ष के कृष्णरेन लचा ने तीसरा पुरस्कार जीता। बी.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष की रुद्राणी देवी मोहाबीर तथा सिमरन धूजीत को सांत्वना पुरस्कार मिला।

15 अक्टूबर, 2025 को अंत्याक्षरी का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि श्री विशाल मंगरू रहे। कार्यक्रम का संचालन भोजपुरी एवं लोक संस्कृति विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. गिरजानंदसिंह बिसेसर ने किया। निर्णायक मंडल में प्रो. राजशेखर, मॉरीशसीय अध्ययन विभाग की व्याख्याता एवं अध्यक्षा, श्रीमती अनिषा बादल कोसी एवं भोजपुरी एवं लोक संस्कृति विभाग के व्याख्याता श्री जयगणेश दावोसिंह शामिल थे। इस प्रतियोगिता में तीनों पुरस्कार बी.ए. हिंदी तृतीय वर्ष के छात्रों ने जीता। प्रथम पुरस्कार विजेता की टोली 'मलंग' में कृष्णरेन लचा, कीर्ति भंतू और शुभम लिलमंड शामिल थे। द्वितीय पुरस्कार विजेता की टोली 'अफ़लातून' में लछमन रोय मोनीष, नीलिमा ऋतुराज और

योविना रामझमन रही। तृतीय पुरस्कार सिमरन धूजीत, शिवानी दूलम और तिश्मा जल्लू की टोली 'मस्ताने' ने जीता।

इसके अतिरिक्त फ़िल्म, पोस्टर एवं श्रुतलेख प्रतियोगिताएँ भी हुईं। 30 अक्टूबर, 2025 को पुरस्कार-वितरण-समारोह का आयोजन हुआ।

साभार : युवाज़ - युवा हिंदी की आवाज़, अंक 12, अक्टूबर 2025

हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस द्वारा हिंदी दिवस समारोह

हिंदी स्पीकिंग यूनियन, मॉरीशस ने कला एवं संस्कृति मंत्रालय के तत्त्वावधान में 11 अक्टूबर, 2025 को मोका स्थित महात्मा गांधी संस्थान के सभागार में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री धरमबीर गोकुल, जी.सी.एस.के., विदेश, क्षेत्रीय एकीकरण एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार मंत्री माननीय श्री धनंजय रामफल एवं जुनियर मंत्री माननीय श्री हंबीराजन नरसिंघेन तथा मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अनुराग श्रीवास्तव की गरिमामयी उपस्थिति रही।

इस अवसर पर स्कूल सर्टिफ़िकेट तथा हायर स्कूल सर्टिफ़िकेट के स्तरों पर हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य में शीर्ष दस में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

अपने संबोधन में राष्ट्रपति ने विद्यार्थियों को उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए बधाई दी और कहानी-कथन, कविता-पाठ और निबंध-लेखन जैसी सृजनात्मक गतिविधियों के महत्त्व को रेखांकित किया तथा हिंदी को नियमित रूप से पढ़ने, लिखने और बोलने के लिए प्रोत्साहित किया। राष्ट्रपति ने हिंदी स्पीकिंग यूनियन की नई अध्यक्षा डॉ. अंजलि चिंतामणि तथा उनकी कार्यकारिणी समिति के सदस्यों को हिंदी को बढ़ावा देने के लिए बधाई दी। इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने एक जीवंत सांस्कृतिक प्रस्तुति दी।

साभार : जी.आई.एस. मॉरीशस

संगोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशाला, जयंती, उत्सव

हिंदी भाषा और संस्कृति की राष्ट्रीय संगोष्ठी

5 से 6 दिसंबर, 2025 तक पश्चिम बंगाल की सांस्कृतिक राजधानी कोलकाता में केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली और महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय (वर्धा) के क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता के संयुक्त तत्त्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'राष्ट्रीय एकात्मकता : लोक, संस्कृति, सहज बोध' विषय पर आयोजित हुआ। यह आयोजन हिंदी भाषा के व्यापक अध्ययन, लोकपरंपरा और संस्कृति के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को समझने के लिए समर्पित एक प्रमुख अकादमिक मंच था।

कार्यक्रम का स्थल साल्ट लेक स्थित अखिल भारतीय स्वच्छता एवं जन स्वास्थ्य संस्थान था। आयोजन के संरक्षक प्रो. कुमुद शर्मा तथा प्रभारी डॉ. नूतन पाण्डेय ने इस संगोष्ठी को उत्कृष्ट रूप से संचालित किया।

5 दिसंबर को उद्घाटन-सत्र में डॉ. अमित राय (क्षेत्रीय संयोजक) द्वारा स्वागत-भाषण दिया गया। उद्घाटन-सत्र के अध्यक्ष प्रो. निर्मल नारायण चक्रवर्ती एवं डॉ. नूतन पाण्डेय ने हिंदी भाषा के माध्यम से भारत की लोकसांस्कृतिक एकता एवं विविधता को समझने पर गहन विचार साझा किए। प्रो. तनुजा मजुमदार, प्रो. सोमा बंदोपाध्याय और प्रो. आर. शशिधरन जैसे वरिष्ठ विद्वानों ने सारगर्भित वक्तव्य दिए।

पहले दिन के सत्रों में प्रो. राज शुक्ला, डॉ. दत्तात्रय मरुमकर, डॉ. इतु सिंह, डॉ. संजय जायसवाल, प्रो. रामेश्वर मिश्र, प्रो. वेदरमण पाण्डेय और डॉ. मधु सिंह जैसे विद्वानों ने अपने शोध और भाषाई अनुभव साझा किए।

6 दिसंबर को आयोजित तृतीय सत्र में वरिष्ठ साहित्यकार मृत्युंजय कुमार सिंह, प्रो. पुष्पा बरनवाल, डॉ. जगदीश भगत और डॉ. गीता दुबे ने हिंदी लोककथाओं और लोकगीतों के माध्यम से राष्ट्रएकता के जटिल विमर्श को उजागर किया। इसी सत्र में युवा शोधार्थियों जैसे ब्रजेश प्रसाद और अजय पोद्दार ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

अंतिम सत्र में भाषाई विविधता, अनुवाद की गतिविधियों और हिंदी के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ पर बहुभाषिक संवाद स्थापित करने पर गहन विचार-विमर्श हुआ। प्रो. अरुण होता, प्रो. नीरज शर्मा, डॉ. विनय कुमार मिश्र और मृत्युंजय श्रीवास्तव ने हिंदी भाषा की विविधताओं को राष्ट्रीय एकता के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया।

समापन-सत्र में प्रो. सरूप प्रसाद घोष की अध्यक्षता में मुख्य अतिथि प्रो. अमरनाथ तथा विशिष्ट अतिथि प्रो. मीरा सिन्हा ने संगोष्ठी का सार प्रस्तुत किया तथा डॉ. नूतन पाण्डेय द्वारा धन्यवाद-ज्ञापन किया गया। संगोष्ठी का प्रतिवेदन अपर्णा सिंह ने प्रस्तुत किया।

साभार : https://jagotv.in/two-day-national-seminar-on-national-integration-kolkata-6-5-december-2025?utm

वेब संगोष्ठी : 'पश्चिमी यूरोपीय शाखा का उद्घाटन एवं रचना-पाठ'

रविवार, 9 नवंबर 2025 को वैश्विक हिंदी परिवार के पश्चिमी यूरोपीय शाखा के उद्घाटन एवं रचना-पाठ का कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता वैश्विक हिंदी परिवार के संरक्षक, डॉ. पदमेश गुप्त ने की। मुख्य अतिथि के रूप में ब्रिटेन के प्रख्यात लेखक डॉ. तेजेन्द्र शर्मा उपस्थित रहे।

रचना-पाठ में विभिन्न देशों से हिंदी साहित्यकारों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन यू.के से

आशीष मिश्रा ने किया। भारत से श्रीमती सुनीता पाहूजा ने स्वागत किया और धन्यवाद-ज्ञापन स्पेन से डॉ. पूजा अनिल ने किया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. जयशंकर यादव, श्री विनयशील, डॉ. महादेव कोलूर और डॉ. ऋषि कुमार थे। डॉ. मोहन बडुआरा, डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा "उत्कर्ष", कृष्णा कुमार, डॉ. विजय नगरकर, डॉ. वेंकटेश्वर राव, डॉ. राजेश गौतम और श्रीमती निर्मदा कुमारी ने तकनीकी एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग किया। कार्यक्रम की मुख्य संयोजक दिव्या माथुर (ब्रिटेन) और सह-संयोजक सुनीता पाहूजा (भारत) रहीं। भारत से डॉ. अनिता वर्मा और डॉ. सुभद्रा कुमारी सह-संयोजक के रूप में शामिल हुईं। अंतरराष्ट्रीय संयोजन की ज़िम्मेदारी डॉ. प्रज्ञा सक्सेना और डॉ. संध्या सिंह ने संभाली।

कार्यक्रम में प्रमुख मार्गदर्शक और संरक्षक की भूमिका अनिल जोशी (अध्यक्ष, वैश्विक हिंदी परिवार), नारायण कुमार (बी.रा. जाग्रथन), प्रो. तोमियो मिज़ोकामी और डॉ. सुरेन्द्र गंभीर ने निभाई। इस आयोजन ने पश्चिमी यूरोपीय देशों में हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त मंच प्रस्तुत किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का फ़ेसबुक पेज

'हिंदीतर प्रांतों में हिंदी पत्रकारिता चुनौतियाँ और दिशा' विषय पर वेब संगोष्ठी

21 दिसंबर, 2025 को वैश्विक हिंदी परिवार ने विश्व हिंदी सचिवालय, केंद्रीय हिंदी संस्थान, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद्, वातायन तथा भारतीय भाषा मंच के तत्त्वावधान में 'हिंदीतर प्रांतों में हिंदी पत्रकारिता चुनौतियाँ और दिशा' विषय पर वेब संगोष्ठी आयोजित की। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध पत्रकार, संपादक एवं लेखक श्री विश्वम्भर नेवल ने की। विशिष्ट अतिथि श्री निर्मलेंदु साहा रहे तथा श्री अनिल जोशी का सान्निध्य रहा। सुश्री नर्मदा कुमारी ने स्वागत-वक्तव्य दिया। अतिथि वक्ताओं में श्री रविशंकर रवि, डॉ. संजय पांडे, श्री रवींद्र भजनी, श्री टी. राघवन एवं सुश्री मनोरमा सम्मिलित थे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य उन क्षेत्रों में हिंदी पत्रकारिता की स्थिति, समस्याओं और भविष्य की संभावनाओं पर विचार करना था, जहाँ हिंदी मुख्य भाषा नहीं है।

श्री टी. राघवन ने कर्नाटक में हिंदी की परिस्थिति और हिंदी पत्रकारिता की चुनौतियों पर अपनी बात रखी। उनके अनुसार भाषा केवल सम्प्रेषण का माध्यम नहीं होता है, वह दो संस्कृतियों को जोड़ती है। श्री रवींद्र भजनी ने स्थानीय भाषा की अस्मिता की चुनौती के बारे में बताया और महाराष्ट्र में हिंदी पत्रकारिता की स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भाषा का कार्य करने वाले राष्ट्र को दिशा दिखाते हैं। सुश्री मनोरमा ने दक्षिण भारत के क्षेत्र में अपनी कार्यानुभूति साझा की। उनके अनुसार भाषा एक सेतु के समान है और इन क्षेत्रों में सम्प्रेषण को लेकर भाषा कभी बाधा नहीं बनी।

श्री रविशंकर रवि ने पूर्वोत्तर भारत की हिंदी पत्रकारिता पर वक्तव्य दिया। उन्होंने बताया कि हिंदी पत्रकारिता अपनी स्थिति के अनुसार संघर्ष करती हुई आगे बढ़ रही है।

श्री संजय पांडे ने पंजाब क्षेत्र में हिंदी पत्रकारिता पर चर्चा करते हुए कहा कि पंजाब में हिंदी पत्रकारिता को स्थानीय समाज के साथ जोड़ना होगा और हिंदी पत्रकारिता को प्रतिस्पर्धा के बजाय संवाद का रास्ता अपनाना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन प्रो. मैथिली पी. राव ने किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार का औपचारिक यूट्यूब चैनल

हिंदी राइटर्स गिल्ड की गोष्ठी

20 दिसंबर, 2025 को स्प्रिंगडेल लाइब्रेरी में हिंदी राइटर्स गिल्ड, कनाडा ने वर्ष 2025 की अंतिम गोष्ठी आयोजित की। कार्यक्रम की शुरुआत गिल्ड की संस्थापक शैलजा सक्सेना के स्वागत से हुई।

गोष्ठी में भारत से आईं लतिका बत्रा ने अपनी कविता सुनाई, जिसमें उन्होंने महिलाओं की जीवन-शैली पर विचार व्यक्त किए। भुवनेश्वरी ने बाल कविता-संग्रह से कविता 'मोर' प्रस्तुत की और प्रियंका शर्मा ने 'माँ का फ़ोन' कविता सुनाकर मातृस्नेह की महत्ता उजागर की।

इंदिरा वर्मा ने 'तब समय क्यों नहीं रुक जाता' कविता प्रस्तुत की, कृष्ण वर्मा ने अपने संस्मरण के माध्यम से बचपन के रोचक अनुभव साझा किए। राकेश मिश्रा ने समाज में महिलाओं की भूमिका पर आधारित कविता सुनाई। प्रीति अग्रवाल की लघुकथा 'जवाब' ने बेटियों के भविष्य पर विचारशील दृष्टि प्रस्तुत की। सुषमा रानी ने पुरानी पीढ़ी की सीख को अपनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

दिव्यम ने फ़िल्म 'धुरंधर' की समीक्षा साझा की। शैलजा सक्सेना ने अपनी कविता 'अद्भुत कविता लिखने की प्रतीक्षा' में लेखन की प्रक्रिया पर बात की। कार्यक्रम के अंत में संचालक योगेश ममगाईं ने धरती को माँ के रूप में प्रस्तुत करते हुए अपनी कविता सुनाई।

साभार : हिंदी राइटर्स गिल्ड कनाडा का फ़ेसबुक

होनोलूलू में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

हवाई विश्वविद्यालय, मानोआ, होनोलूलू, संयुक्त राज्य अमेरिका में 10-12 दिसंबर 2025 को अंतरराष्ट्रीय बहुअनुशासनात्मक सम्मेलन का आयोजन हवाई विश्वविद्यालय, मानोआ के हिंदी-उर्दू विभाग के प्रोफ़ेसर साई भटावाडेकार ने किया। सम्मेलन का उद्देश्य हिंदी-उर्दू और अन्य दक्षिण एशियाई भाषाओं के शिक्षण में नवाचार को बढ़ावा देना रहा।

'भाषा-शिक्षण की विधि के रूप में कहानी का प्रयोग', 'डिजिटल माध्यमों के द्वारा भाषा का अनुभव', 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सावधानीपूर्ण और रचनात्मक उपयोग', 'कक्षागत अभ्यास', 'खुले स्रोत संसाधनों का उपयोग' आदि विषयों पर प्रस्तुतियाँ हुईं। कार्यक्रम में भाषा-शिक्षण के तकनीकी, दार्शनिक और व्यावहारिक आयामों को प्रस्तुत किया गया।

ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, मैकगिल विश्वविद्यालय, सिटी ऑफ़ लंदन विश्वविद्यालय (एसओएएस), येल विश्वविद्यालय, ड्यूक विश्वविद्यालय, मिशिगन स्टेट विश्वविद्यालय, ओहायो स्टेट विश्वविद्यालय, ओसाका विश्वविद्यालय, टोक्यो विश्वविद्यालय, फ़िजी विश्वविद्यालय, हबीब विश्वविद्यालय, मुंबई विश्वविद्यालय और अन्य संस्थानों के प्रतिभागियों ने अपने शोध और प्रायोगिक अनुभव साझा किए, जिससे अंतरराष्ट्रीय

सहयोग और बहुअनुशासनात्मक संवाद को बढ़ावा मिला।

साभार : https://manoa.hawaii.edu/ipll/news/2025/12/reimagining-hindi-urdu-and-south-asian-language-learning.php?utm

हरियाणा में अगन फ़ाउंडेशन के तत्त्वावधान में गोष्ठी

13 नवंबर, 2025 को फ़रीदाबाद, हरियाणा में डॉ. बबिता किरण द्वारा अगन फ़ाउंडेशन के तत्त्वावधान में एक साहित्यिक बैठक का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में यू.के. के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार श्री तेजेंद्र शर्मा विशिष्ट अतिथि रहे। उन्होंने साहित्य की विधाओं पर अपने विचार रखे, जिसमें छंदमुक्त कविता, गज़ल और कहानी शामिल हैं। उन्होंने अपनी कहानी 'ये मुझ में कौन रहने आ गया' का पाठ किया तथा पुरवाई में प्रकाशित न्यूयॉर्क शहर के नवनिर्वाचित मेयर मदनानी से संबधित संपादकीय पढ़ा। गज़लकार अजय अज्ञात ने दो गज़लों का पाठ किया और डॉ. बबिता किरण ने अपनी लघुकथा सुनाई। कवि मंजीत सिंह, डॉ. दुर्गा सिन्हा 'उदार', गज़लकार अजय अज्ञात, डॉ. प्रीता पंवार, कविता अदलक्खा, डॉ. अंजु दुआ 'जैमिनी', आश्मा कौल आदि प्रतिष्ठित लेखक-लेखिकाएँ भी उपस्थित रहे।

साभार : श्री तेजेंद्र शर्मा का फ़ेसबुक पेज

फ़िजी में राष्ट्रीय मानक हिंदी सम्मेलन

6 दिसंबर, 2025 को हिंदी परिषद् फ़िजी द्वारा फ़िजी विश्वविद्यालय के सामाबुला कैम्पस में राष्ट्रीय मानक हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन भारतीय उच्चायुक्त, फ़िजी महामहिम श्री सुनीत मेहता द्वारा किया गया। डॉ. सुभाषिणी कुमार ने फ़िजी नेशनल यूनिवर्सिटी का प्रतिनिधित्व करते हुए शैक्षणिक वक्ता के रूप में भाग लिया।

सम्मेलन के दौरान फ़िजी में हिंदी विषय में विद्यार्थियों के नामांकन और दक्षता में आई तीव्र गिरावट पर गंभीर चिंता व्यक्त की गई। एक अन्य चिंता हिंदी में बच्चों के लेखन-कौशल के अभाव को लेकर व्यक्त की गई। शिक्षकों ने उल्लेख किया कि अनेक विद्यार्थी घर और विद्यालय दोनों में मुख्यतः अंग्रेज़ी बोलते और पढ़ते हैं। यद्यपि बहुत से विद्यार्थियों को बोलचाल की फ़िजी-हिंदी का ज्ञान है, किंतु वे मानक हिंदी (देवनागरी लिपि) में लिखने की क्षमता से प्रायः वंचित हैं, जो भाषा की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए गंभीर प्रश्न उत्पन्न करता है।

आभार : डॉ. सुभाषिणी कुमार, फ़िजी नेशनल यूनिवर्सिटी

हिंदी पक्षोत्सव

अक्टूबर 2025 में भारत पर्यावास केंद्र के भारत बोध केंद्र के अंतर्गत नवगठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा गुलमोहर सभागार, नई दिल्ली में हिंदी पक्षोत्सव का समापन समारोह पुरस्कार आयोजित हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता केंद्र के निदेशक प्रो. (डॉ.) के. जी. सुरेश ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक श्री अनंत विजय उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि यह आयोजन हमारी मूल भाषा से पुनः साक्षात्कार का क्षण है। हिंदी भाषा का मूल संस्कृत है, उसमें अनावश्यक संयोजन नहीं होना चाहिए। उन्होंने हिंदी की 100 श्रेष्ठतम कृतियाँ केंद्र के पुस्तकालय को भेंट करने की घोषणा की।

प्रो. (डॉ.) के. जी. सुरेश ने कहा कि जब हम अपनी मातृभाषा में सोचते और सृजन करते हैं, तब हम अपने मूल से जुड़ते हैं। समारोह में तीन प्रमुख गतिविधियाँ आयोजित की गईं। पहली गतिविधि राजभाषा प्रेरक पुस्तक-प्रदर्शन, जिसमें प्रेमचंद, भारती, रेणु, दिनकर, बच्चन की कृतियाँ और नाट्यशास्त्र, योगसूत्र, अर्थशास्त्र संबंधी ग्रंथ प्रदर्शित किए गए। दूसरी गतिविधि, काव्य-पाठ प्रतियोगिता, जिसमें कर्मचारियों ने अपनी मौलिक कविताएँ प्रस्तुत कीं। निर्णायक श्री रंजन कुमार बरुण ने चयनित कविताओं को 'आवास भारती' पत्रिका में प्रकाशित करने की घोषणा की। तीसरी गतिविधि पोस्टर-निर्माण प्रतियोगिता, जिसमें हैबिटैट लर्निंग सेंटर के 95 विद्यार्थियों ने हिंदी के प्रति अपने विचारों को सृजनात्मक रूप में प्रस्तुत किया। समारोह का समापन विजेताओं को सम्मान-पत्र और पुस्तक कूपन प्रदान कर किया गया।

साभार : https://www.marudharabharti.com/10/2025/hindi-pakshaotsav-celebration-organised.html?utm

सूरीनाम में हिंदी संवाद कार्यक्रम

1 दिसंबर, 2025 को पारामारिबो स्थित भारत भवन में हिंदी संवाद कार्यक्रम के उपलक्ष्य में एक विशेष परिचर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें सूरीनाम में हिंदी की वर्तमान दशा और दिशा पर विचार-विमर्श हुआ। प्रतिभागियों ने युवा पीढ़ी में हिंदी के प्रसार को सुदृढ़ बनाने के लिए ठोस सुझाव प्रस्तुत किए। विश्व हिंदी सम्मेलन अथवा क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन सूरीनाम में आयोजित करने से संबंधित प्रस्ताव पर भी विचार किया गया। भारत के राजदूत ने कहा कि हिंदी संवाद कार्यक्रम जैसी पहल भारत और सूरीनाम के बीच सांस्कृतिक संबंधों को गहराई प्रदान करती है।

श्री सत्यानंद प्रमसुख की रिपोर्ट

पुस्तक-चर्चा मंच

मॉरीशस में हिंदी स्पीकिंग यूनियन ने इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र, फ़ेनिक्स के सहयोग से 13 नवंबर 2025 को 'पुस्तक-चर्चा मंच' का आयोजन किया। कार्यक्रम में मॉरीशस के स्थानीय हिंदी लेखकों की रचनाओं पर विचार-विमर्श हुआ। विशेष रूप से दो प्रमुख पुस्तकें चर्चा के केंद्र में रहीं : प्रो. राज शेखर, आईसीसीआर हिंदी पीठ द्वारा रचित 'डोडो और अन्य कहानियाँ' जिसमें बाल-साहित्य और कथात्मक शैली के माध्यम से संवेदनशील विषयों को प्रस्तुत किया गया। इसके अतिरिक्त धनराज शम्भु की रचना 'प्यार तो प्यार है' में मानवीय संबंधों का विश्लेषण किया गया। लेखकों की रचनाओं के कथ्य, भाषा-शैली और समकालीन संदर्भों पर विचार-विमर्श हुआ। यह मंच हिंदी लेखकों के उत्साहवर्धन में सहायक सिद्ध हुआ।

साभार : हिंदी स्पीकिंग यूनियन की वेबसाइट

कहानी-संग्रह 'मायाजाल' पर परिचर्चा

6 दिसंबर, 2025 को दिल्ली के साहित्य अकादमी सभागार में कस्तूरी द्वारा आयोजित साहित्यिक शृंखला 'किताबें बोलती हैं : सौ लेखक, सौ रचना' के अंतर्गत सुप्रसिद्ध कथाकार दिव्या माथुर के कहानी–संग्रह 'मायाजाल' का लोकार्पण किया गया एवं इसपर परिचर्चा आयोजित की गई।

वरिष्ठ कथाकार उदय प्रकाश ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि के रूप में कवि एवं आलोचक अनामिका उपस्थित रहीं। वक्ताओं में शिक्षाविद् किरण नंदा, कथाकार अंजू वेद और शिक्षाविद् गीता पाण्डेय शामिल हुए। कार्यक्रम का संचालन विशाल पाण्डेय ने कुशलतापूर्वक किया।

गीता पाण्डेय ने कहा कि दिव्या माथुर की सत्रह कहानियों में जीवन मूल्यों, बाल-मन की जटिलताओं, संबंधों का विच्छेद, व्यक्तिगत व्यस्तता, स्त्री-बिखराव और प्रेम की अनुभूतियाँ सजीव रूप में उभरती हैं। अंजू वेद ने बताया कि ब्रिटेन की पृष्ठभूमि पर आधारित इन कथाओं में बुज़ुर्गों की स्थितियाँ, लड़की-लड़के के बीच अंतर, सांस्कृतिक भिन्नताएँ और सामाजिक दबाव के विभिन्न रूप प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत हुए हैं। किरण नंदा ने प्रवासी जीवन का नॉस्टेलजिया चित्रित किया।

मुख्य अतिथि अनामिका ने स्त्री-मुक्ति और पुरुष-प्रधान समाज के विरुद्ध संघर्ष पर विशेष टिप्पणी की। अध्यक्षीय उद्बोधन में उदय प्रकाश जी ने दिव्या माथुर की सरल और सहज भाषा तथा पितृसत्ता पर निष्पक्ष दृष्टिकोण की सराहना की।

साभार : वातायन यूरोप

डीएवी में हिंदी और हिंदीतर साहित्य पर हुआ मंथन

10 नवंबर, 2025 को डीएवी कॉलिज, अमृतसर के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग द्वारा 'हिंदी और हिंदीतर साहित्य में भारतीय ज्ञान-परम्परा : विविध विमर्श' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, उच्च शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के अनुदानित सौजन्य से आयोजित इस संगोष्ठी में पूरे भारत के विद्वानों सहित भारतीय मूल के प्रवासी हिंदी साहित्यकारों ने सहभागिता की।

कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. अमरदीप गुप्ता ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम भारतीय भाषाओं में भी शिक्षा का समावेश और प्रसार करें। विशिष्ट वक्ता की भूमिका में केंद्रीय संस्थान, आगरा की क्षेत्रीय निदेशक प्रोफ़ेसर अपर्णा सारस्वत ने अपने संबोधन में कहा आज शिक्षण, विज्ञान, तकनीकी, वाणिज्य अर्थात् किसी भी राष्ट्र की संपूर्ण प्रगति के लिए अनिवार्य प्रत्येक विषय भारतीय ज्ञान परम्परा का ही एक विकसित होता हुआ प्रारूप है, जो राष्ट्र के भविष्य की रचनात्मकता को आधार प्रदान करता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता सेंटर यूनिवर्सिटी हिमाचल प्रदेश के चांसलर पद्मश्री डॉ. हर मोहिंदर सिंह बेदी ने की। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि ऐसी परम्पराएँ ऐतिहासिक विकास में, एक युग से दूसरे में संक्रमण के समय मौजूद ज़रूर रहती है, पर उनका नष्ट होना अवश्यम्भावी है, किन्तु समाज के बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा अपने सृजन के माध्यम से इसे संरक्षण दिया जाता है। बीज-वक्ता के रूप में लंदन से श्री तेजेन्द्र शर्मा ने कहा कि परम्परा का ज्ञान के अनुकूल होना अवश्यम्भावी है, किन्तु हमें समझना होगा कि ज्ञान और परंपरा दो अलग-अलग विषय हैं। विभाग मुख्य, प्रो. किरण खन्ना ने बताया कि देश भर से प्राप्त शोध आलेखों को प्रकाशित कर एक पुस्तक का विमोचन भी किया गया। संगोष्ठी के अंत में सभी सुधी वक्ताओं को स्मृति चिह्न, अंग वस्त्र, पुस्तक और प्रमाण-पत्र के साथ सम्मानित किया गया।

साभार : डी.ए.वी. कॉलिज अमृतसर का पोस्ट

जापान में राम लीला का मंचन

जापान में ओसाका विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने 30 नवम्बर 2025 को राम लीला का मंचन किया। ओसाका विश्वविद्यालय में हर वर्ष आयोजित होने वाले भाषा नाटक उत्सव (गोगेकीसाई) में इस वर्ष 21 भाषाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस वर्ष इन्डोनेशियाई विभाग ने भी रामायण का मंचन किया। नाटक को देखने जापानी समुदाय के साथ-साथ बड़ी संख्या में भारतीय समुदाय भी एकत्र हुआ। संवाद-लेखन और नाटक का निर्देशन ओसाका विश्वविद्यालय में हिंदी के एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने किया।

साभार : वैश्विक हिंदी परिवार की औपचारिक वेबसाइट

अबु धाबी में हिंदी की गतिविधियाँ

29 अक्टूबर, 2025 को हिंदी विभाग के स्पंदन क्लब द्वारा 'डायलॉगबाज़' गतिविधि का आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा 9 के विद्यार्थियों ने फ़िल्मों के प्रेरक पात्रों के रोचक संवादों की शानदार प्रस्तुति दी। इस गतिविधि

का उद्देश्य विद्यार्थियों में फ़िल्मों के माध्यम से सकारात्मक संदेश को समझना और आत्मसात करना था।

30 अक्टूबर, 2025 को भारतीय विद्या भवन, अबु धाबी के प्रांगण में कक्षा 3 के नन्हे सितारों ने अंतरराष्ट्रीय इंटरनेट दिवस के अवसर पर एक विशेष हिंदी प्रार्थना सभा प्रस्तुत की। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने इंटरनेट के सही और ज़िम्मेदार उपयोग के महत्त्व को बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया।

24 नवंबर, 2025 को भवन्स अबु धाबी के विद्यार्थियों ने बाल प्रतिभा समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। नायोमिका को प्रथम पुरस्कार (प्रदर्शन व प्रस्तुति), मिशा को द्वितीय पुरस्कार (कथा-कथन), तनिश्वेता को प्रेरक पुरस्कार (विज्ञापन प्रस्तुतीकरण), अक्षया को द्वितीय पुरस्कार (वाद-विवाद - व्यक्तिगत) तथा अक्षया व नंदिनी को द्वितीय पुरस्कार (वाद-विवाद - समूह) प्राप्त हुआ। समग्र विजेता के रूप में विद्यालय द्वितीय स्थान पर आया।

साभार : भवन्स अबु धाबी का फ़ेसबुक

सूरीनाम में पुस्तक अर्पण समारोह

राजदूत सुभाष गुप्ता ने 'इंडियाकॉर्नर' पहल के अंतर्गत सूरीनाम हिंदी परिषद् के पुस्तकालय को हिंदी पुस्तकें भेंट कीं। इस योगदान का उद्देश्य परिषद् के संसाधनों को समृद्ध करना और सूरीनाम समुदाय के बीच हिंदी भाषा और साहित्य के साथ जुड़ाव को बढ़ावा देना है। 'इंडियाकॉर्नर' पहल सांस्कृतिक सेतु के रूप में कार्य करती रही है, जो साझा विरासत और ज्ञान के माध्यम से पीढ़ियों को जोड़ती है। राजदूत ने सूरीनाम में हिंदी के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के प्रति समर्पण के लिए सूरीनाम हिंदी परिषद् की सराहना की।

साभार : भारतीय राजदूतावास, सूरीनाम का पोस्ट

आगरा में 'हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम'

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा दिनांक 9 दिसंबर, 2025 से 26 दिसंबर, 2025 तक राजकीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डाइट गंगटोक, सिक्किम के डी.एल.एड. के 45 प्रशिक्षणार्थियों हेतु 'हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम' संचालित किया गया। 26 दिसंबर को निदेशक प्रभारी प्रो. हरिशंकर की अध्यक्षता में पाठ्यक्रम का समापन किया गया। नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की अध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की अध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी, राजकीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डाइट गंगटोक, सिक्किम की सहायक प्राध्यापक सुश्री रजीता गुरुंग एवं सुश्री यंगजॉम लच्युनग्पा उपस्थित रहीं। सिक्किम के प्रशिक्षणार्थियों ने अभिमत अनुभव एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. शिखा माहेश्वरी, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर ने किया।

साभार : सूचना एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान

गोरखपुर पुस्तक महोत्सव 2025 - साहित्यिक महाकुंभ

गोरखपुर ने अपनी साहित्यिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर को समर्पित प्रथम गोरखपुर पुस्तक महोत्सव का आयोजन किया, जिसे 'साहित्यिक महाकुंभ' के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। यह आयोजन 1 से 9 नवम्बर 2025 तक दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में हुआ और इसे राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (NBT) द्वारा संचालित किया गया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महोत्सव का उद्घाटन किया। महोत्सव में 100 से अधिक प्रकाशकों द्वारा 200 से अधिक स्टॉलों में हिंदी की हज़ारों पुस्तकें प्रदर्शित की गयीं।

इस महोत्सव में बाल-मंडप का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी कहानियों का सजीव पाठ, कठपुतली शो, कला एवं शिल्प कार्यशालाएँ आदि हुईं। डॉ. मनोरमा मिश्रा, डॉ. रामदेव शुक्ल, व्योमेश शुक्ल और आशा प्रभात ने साहित्यिक मंच पर अपने विचार साझा किए।

इस अवसर पर, बिरजू महाराज कथक संस्थान द्वारा शास्त्रीय नृत्य, हिंदी गीत और कव्वाली प्रस्तुत की गयी। मालिनी अवस्थी ने गीतों का गायन किया और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (NSD) के कलाकारों द्वारा नाट्य-प्रस्तुति हुई।

आगंतुकों ने राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय में हिंदी में प्रकाशित 3,000 से अधिक ई-पुस्तकें नि:शुल्क प्राप्त करने का लाभ उठाया।

साभार : द टाइम्स ऑफ़ इंडिया

स्पर्श हिमालय महोत्सव 2025

हिमालय की गोद में बसे लेखक गाँव, देहरादून में 3 से 5 नवंबर 2025 तक आयोजित स्पर्श हिमालय महोत्सव ने हिंदी भाषा, साहित्य, संस्कृति और कला के वैश्विक प्रचार का अद्वितीय मंच प्रस्तुत किया।

3 नवंबर को महोत्सव का उद्घाटन कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत की गरिमामयी

उपस्थिति में हुआ। उद्घाटन-सत्र का मुख्य विषय था "हिंदी और भारतीय साहित्य, संस्कृति एवं कला का विश्व में विस्तार"। इस अवसर पर विद्वानों और प्रतिष्ठित लेखकों ने हिंदी और भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त किए। पद्मश्री कैलाश खेर सहित कई प्रमुख कलाकारों ने हिंदी गीत प्रस्तुत किए।

4 नवंबर को मॉरीशस के पूर्व राष्ट्रपति पृथ्वीराजसिंह रूपन, केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल और डॉ. जितेन्द्र सिंह उपस्थित रहे। इस दिन भारतीय दर्शन और नवोदित रचनाकारों के नए दृष्टिकोण पर सत्र आयोजित किए गए। दून कल्चर स्कूल, झाझरा के छात्रों ने पारंपरिक गीत और आदिवासी नृत्य प्रस्तुत किए, जबकि स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय के नाट्य विभाग ने भावपूर्ण नाट्य-प्रदर्शन प्रस्तुत कर हिंदी और भारतीय संस्कृति की समृद्धि का परिचय दिया।

महोत्सव का समापन 5 नवंबर को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और राज्यपाल लेफ़्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेवानिवृत्त) की उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर साहित्य, कला, शिक्षा, पर्यावरण और संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले व्यक्तियों का सम्मान किया गया। समापन-सत्र में पद्म भूषण चित्रकार जतिन दास, प्रतिष्ठित फ़ोटोग्राफ़र त्रिलोक कपूर और बहुप्रतिभाशाली कलाकार आदित्य नारायण ने हिंदी और भारतीय कला के रंगों और भावों का अद्भुत प्रस्तुतीकरण किया।

साभार : https://garhwalpost.in/luminaries-from-60-countries-to-gather-at-lekhak-gaon-celebration-of-literature-culture-and-art/?utm

साहित्य अकादेमी का 'हिंदी कहानीपाठ' साहित्य मंच

नई दिल्ली के रवींद्र भवन में 27 अक्टूबर, 2025 को साहित्य अकादेमी द्वारा 'साहित्य मंच : हिंदी कहानीपाठ' का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम हिंदी कथासाहित्य की समृद्ध परंपरा को प्रस्तुत करने और इसे नए पाठक वर्ग तक पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण अवसर बना। कहानियों में मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक परिवर्तनों और वर्तमान जीवन की झलक प्रस्तुत की गई। प्रत्येक पाठ के पश्चात् लेखकों और श्रोताओं के बीच सजीव संवाद हुआ।

स्रोत : *साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली – 27 अक्टूबर 2025, "साहित्य मंच : हिंदी कहानीपाठ" (sahitya-akademi.gov.in)*

विश्व रंग श्रीलंका 2025 – हिंदी और भारतीय भाषाओं का अंतरराष्ट्रीय महोत्सव

अक्टूबर–नवंबर 2025 में कोलंबो, श्रीलंका में विश्व रंग श्रीलंका 2025 का भव्य आयोजन हुआ, जो हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रचार को समर्पित था।

महोत्सव का उद्घाटन विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो में हुआ। समापन-समारोह में सभी प्रतिभागियों ने "हम फ़िर मिलेंगे" का भावपूर्ण संदेश दिया। कार्यक्रम में 'साहित्यिक शोध', 'तुलनात्मक लोक साहित्य', 'ऑनलाइन हिंदी शिक्षा', 'विदेशी भाषा के रूप में हिंदी में रोज़गार के अवसर' आदि विषयों पर गहन विचार-विमर्श किया गया।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड के माध्यम से सैकड़ों श्रीलंकाई छात्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया। महोत्सव के दौरान कई महत्त्वपूर्ण साहित्यिक प्रकाशन जैसे 'वनमाली कथा', 'रंग संवाद' तथा 'इलेक्ट्रॉनिक फ़ॉर यू' विमोचित किए गए। आतिशबाज़ी और कविता-पाठ ने महोत्सव को जीवंत और उत्सवमय बना दिया। निदेशक संतोष चौबे ने टैगोर अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र के माध्यम से ऑनलाइन हिंदी-शिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार करने की योजना का ऐलान किया।

साभार : https://www.centralchronicle.com/vishwa-rang-sri-lanka-2025-a-celebration-of-language-culture-and-unity/?utm

आभासी कार्यक्रम

(i) हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि

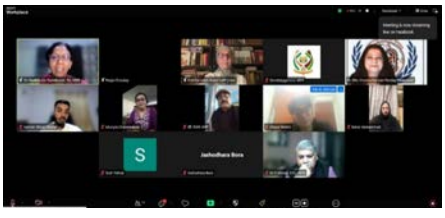

11 अक्टूबर, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि के 30वें संस्करण का आयोजन किया, जिसकी शुरुआत विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी के स्वागत-वक्तव्य से हुई। सिंगापुर से मयूर मिश्रा ने बताया कि मिथिलेश्वर, प्रेमचंद और मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं ने उनके दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव डाला और उन्हें सोचने-समझने की शक्ति प्रदान की। ईरान से बहार मोहम्मदी ने कहा कि हिंदी का प्रयोग करते समय गलतियाँ करना भाषा सीखने का एक हिस्सा है। मॉरीशस से हेमन ध्रुव धोरा ने रामचरितमानस में जीवन-मूल्यों की चर्चा की। युवा भारतीय इंटरनेशनल स्कूल, सिंगापुर की हिंदी शिक्षिका पूजा चौबे ने डिजिटल माध्यमों द्वारा साहित्य पढ़ाने पर व्याख्यान दिया। तेहरान विश्वविद्यालय, ईरान की प्रोफ़ेसर डॉ. फरज़ानेह आज़म लोटफ़ी के अनुसार, हिंदी भाषा द्वारा आधुनिक साहित्य और प्राचीन भारतीय साहित्य दोनों को समझा जा सकता है। मॉरीशस की सरस्वती हिंदी पाठशाला की अध्यापिका मंग्रा धनेश्वरी ने कहा कि वे साहित्य को सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़कर पढ़ाती हैं। हिंदी साहित्यकार व फ़िल्म समीक्षक, डॉ. संजय अनंत ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि साहित्य संवेदनाओं के विकास का साधन है। हिंदी साहित्य मानव को मानव बनाने में सहायक होता है। विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने आभार-ज्ञापन किया तथा अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन, नीदरलैंड्स की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडे ने कार्यक्रम का संचालन किया।

2 नवंबर, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित 'हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि -

भाग 31' आप्रवासी दिवस के संदर्भ में संपन्न हुआ। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। इसके उपरान्त दक्षिण अफ़्रीका से निर्मला देवी महाराज ने दक्षिण अफ़्रीका में गिरमिट भारतीयों के संघर्ष का वर्णन किया। त्रिनिदाद से अरिस्ता कटवारू ने डॉ. कादम्बरी आदेश की कविताओं के माध्यम से गुरु के सम्मान का संदेश दिया। मॉरीशस से पूर्वी झोरी ने मधुकर भगत की कविता 'मानव मन' में मानवीय भावनाओं का विश्लेषण किया। हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ़्रीका के अध्यक्ष, श्री राजिश लछमन ने स्वामी भवानी दयाल के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला। भारतीय विद्या संस्थान, त्रिनिदाद की हिंदी शिक्षिका, डॉ. विजयंती महाराज ने श्रीमती कादंबरी आदेश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर वक्तव्य दिया। प्रोफ़ेसर सुदर्शन जगेसर डी.ए.वी. कॉलिज, मॉरीशस से राजेश कुमार उदोय ने कहा कि मॉरीशसीय लेखकों ने साहित्य में मॉरीशस के इतिहास और समाज को जीवंत किया है। भारत के वरिष्ठ कवि, बाल साहित्यकार, अनुवादक एवं चिंतक श्री दिविक रमेश ने मातृभाषा के सम्मान पर ज़ोर दिया। अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडे ने कार्यक्रम का संचालन किया।

(ii) हिंदी में अभिव्यक्ति

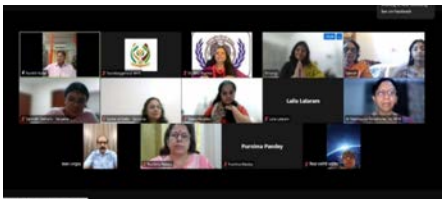

25 अक्टूबर, 2025 को विश्व हिंदी सचिवालय ने 'हिंदी में अभिव्यक्ति' के 30वें संस्करण का आयोजन किया। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी के स्वागत-वक्तव्य के बाद मलेशिया से स्वरा केलूसकर ने कहा कि हिंदी भाषा का विकास तकनीक से जुड़कर संभव है। सूरीनाम से स्वस्ति सुखलाल ने बताया कि सूरीनाम में आज भी धर्म, संस्कृति और हिंदी भाषा का संरक्षण किया जा रहा है। तंज़ानिया से सन्निधि जैठालिया ने तंज़ानिया में भारतीय त्यौहारों को मनाने की विधि पर बात की। विकास इंटरनेशनल स्कूल, कुआलालंपुर, मलेशिया से शिवांगी पॉल ने खेलों के माध्यम से बच्चों को हिंदी सिखाने की चर्चा की। दिव्य हिंदी पाठशाला, सूरीनाम से कमला रामचरण-गणेश ने बहुभाषी देश में हिंदी-शिक्षण की चुनौतियों और समाधान पर अपने विचार रखे। तंज़ानिया से सरिता जैठालिया ने बताया कि वे बच्चों को सहज और रोचक तरीके से हिंदी सिखाती हैं। मुंबई, भारत के महानगर पालिका के हिंदी विभाग के पूर्व प्रशासनिक अधिकारी श्री रामहित यादव ने बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता पर बात की और हिंदी-शिक्षण में चित्र-पहचान और नाट्यक्रियाओं जैसे रचनात्मक माध्यमों के उपयोग पर बल दिया। अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडे ने कार्यक्रम का संचालन किया।

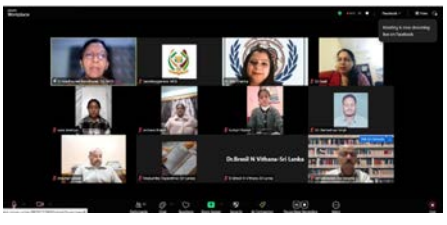

6 दिसंबर, 2025 को 'हिंदी में अभिव्यक्ति – भाग 31' आभासी कार्यक्रम विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-भाषण से आरंभ किया। श्रीलंका से मधुशिका दयारथना ने ओमप्रकाश वाल्मीकि के आत्मकथात्मक उपन्यास 'जूठन' में सामाजिक यथार्थ और जातिगत भेदभाव की समीक्षा की। भूटान से साना लावण्या ने भूटान के राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय फूल तथा राष्ट्रीय पक्षी के बारे में जानकारी दी। भारत से गुंजन ने हिमाचल प्रदेश की क्षेत्रीय बोलियों पर अपने विचार रखे। सबरगमुना यूनिवर्सिटी ऑफ़ श्रीलंका के वरिष्ठ हिंदी प्राध्यापक डॉ. ब्रेसिल नागोडा विथाना ने श्रीलंका के हिंदी-शिक्षण की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी-शिक्षण केवल व्याकरण के शिक्षण तक सीमित नहीं है। इसके अंतर्गत साहित्य, काव्यशास्त्र और 'हिंदी फ़ॉर टुरिज़म' जैसे विषय भी पढ़ाए जाते हैं। रिनचेन केएनफ़ेन प्राथमिक विद्यालय, भूटान की हिंदी अध्यापिका, डॉ. अर्चना ठाकुर ने बताया कि भूटान में हिंदी कक्षा के लिए प्राप्त सीमित समय के बावजूद छात्र धीरे-धीरे हिंदी सीखने लगते हैं। भारत से पवन कुमार चौहान ने कहा कि बच्चों को लेखन की स्वतंत्रता देनी चाहिए, जिससे उनकी रचनात्मकता विकसित हो सके और हिंदी में वे आत्मविश्वास से अभिव्यक्ति कर सकें। एन सी एल, पुणे, भारत की वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, डॉ. स्वाती चड्ढा ने हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु भारत के केंद्रीय सरकार की योजनाओं की जानकारी दी। कार्यक्रम के आरंभ में विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-भाषण दिया और समापन में विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया। अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडे ने मंच का संचालन किया।

('हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि' तथा 'हिंदी में अभिव्यक्ति' आभासी कार्यक्रमों के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल: https://www.youtube.com/@worldhindisecretariat पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

साक्षात्कार

6 अक्टूबर, 2025 को मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'तंज़ानिया में हिंदी की स्थिति एवं रामचरितमानस' विषय पर 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया गया। तंज़ानिया से मॉरीशस आए, श्री आदर्श शर्मा इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे। श्री आदर्श शर्मा तंज़ानिया में भारतीय मूल के निवासी हैं, जो बीमा क्षेत्र में कार्यरत हैं। वे हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में भी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि तंज़ानिया में बसने के बाद हिंदी भाषा के साथ उसका भावात्मक संबंध और भी प्रगाढ़ हो गया। तंज़ानिया में वे स्थानीय बच्चों को हिंदी और भारतीय परंपराओं से परिचित कराने में सक्रिय सहयोग देते हैं। उनके अनुसार रामचरितमानस का 'सुन्दरकाण्ड' व्यक्ति को जीवन की चुनौतियों का धैर्यपूर्वक सामना करने की शक्ति प्रदान करता है। उन्होंने युवाओं को प्रतिदिन 'सुन्दरकाण्ड' अथवा रामचरितमानस के किसी भी अंश का पाठ करने की प्रेरणा दी, उनके अनुसार रामचरितमानस व्यक्ति को सही दिशा और संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है। श्री धनराज शम्भु ने इस साक्षात्कार के लिए श्री आदर्श शर्मा के प्रति आभार व्यक्त किया।

20 अक्टूबर, 2025 को प्रसारित 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम के अंतर्गत सिंगापुर से मॉरीशस पधारे, श्री राजीव कुमार मिश्र का साक्षात्कार लिया गया। श्री राजीव कुमार मिश्र बैंकिंग क्षेत्र में उच्च पद पर कार्यरत हैं। अभिनय और रंगमंच के प्रति उनका रुझान बचपन से गहरा रहा है। भारत से सिंगापुर आने के बाद उन्होंने अभिनय के प्रति

अपने जुनून को बनाए रखा, जिसके कारण वे 'उगना नाटक मंडली' से जुड़े तथा इस मंडली के सक्रिय सदस्य हैं। मॉरीशस आने के अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें स्थानीय कलाकारों के साथ अभिनय का संयुक्त अभ्यास करना, नाट्य-प्रस्तुतियों की तैयारियों को सुदृढ़ करना और मॉरीशस की नाट्य-पद्धति को समझना था। मॉरीशस की नाट्य-परंपरा, संस्कृति और लोगों की सरलता ने उनको विशेष रूप से प्रभावित किया। गंगा तालाब की यात्रा तथा स्थानीय कलाकारों के साथ रंगमंच के कार्य ने उन्हें गहरा आध्यात्मिक व सांस्कृतिक अनुभव प्रदान किया। श्रीमती अश्विनी देवी हेमू ने इस साक्षात्कार के लिए श्री राजीव कुमार मिश्र के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

17 नवंबर, 2025 को मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के सहयोग से आयोजित विश्व हिंदी सचिवालय के 'क्षितिज' कार्यक्रम में श्रीमती आराधना झा श्रीवास्तव मुख्य अतिथि रहीं। श्रीमती आराधना झा ने कहा कि विद्यालयी जीवन से ही नाटक में उनकी रुचि रही है और कई प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट अभिनय के लिए उन्हें पुरस्कार भी मिले। यद्यपि उनका प्रमुख कार्यक्षेत्र पत्रकारिता रहा है, फिर भी अभिनय और निर्देशन से उनका गहरा संबंध रहा है। वे बिहार से हैं और मिथिला की 'उगना' परंपरा से प्रेरित होकर उन्होंने उगना नाट्य मंडली की स्थापना की। हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर विश्व हिंदी सचिवालय में आयोजित कार्यक्रम में भगवत् गीता के मंचन में श्री कृष्ण की भूमिका निभाना उनके लिए बड़ा सौभाग्य रहा। इसी अवसर पर उनकी नवीन पुस्तक 'भारत मुझमें बसता है' का लोकार्पण भी किया गया। उनकी यह पुस्तक 108 कविताओं का एक सुंदर संकलन है, जो नौ अलग-अलग खंडों में जीवन के अनुभवों को अभिव्यक्त करती है। डॉ. शशि दूकन ने इस साक्षात्कार के लिए श्रीमती आराधना झा श्रीवास्तव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

29 दिसंबर, 2025 को 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया गया, जिसमें मॉरीशसीय कवि श्री बिसुन्दयल रामफल का साक्षात्कार लिया गया। श्री रामफल जी के कविता-संग्रह 'कुंती' में पचास से अधिक कविताएँ संकलित हैं। उन्होंने यह कृति अपनी माँ को समर्पित की है, जिन्हें वे अपने जीवन का आधार और ईश्वरतुल्य मानते हैं। उन्होंने बताया कि उनकी माता ने अत्यंत संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में परिवार का पालन-पोषण किया और उनके संघर्ष ने इस काव्य-संग्रह को जन्म दिया। इस संकलन की सभी रचनाएँ जीवन के यथार्थ से जुड़ी हुई हैं और अपने गाँव के परिवेश से संबंधित हैं। साथ ही, उन्होंने दो अन्य पुस्तकों की भी रचना की हैं, जो व्यक्तिगत अनुभवों का प्रतिफल है। श्रीमती कल्पना लालजी ने इस साक्षात्कार के लिए श्री बिसुन्दयल रामफल के प्रति आभार व्यक्त किया।

(विभिन्न देशों के हिंदी विद्वानों के साक्षात्कार विश्व हिंदी सचिवालय की औपचारिक वेबसाइट https://vishwahindi.com/new/# के 'ओडिओ' भाग पर उपलब्ध है।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

लोकार्पण

'दुनिया काठ की' का लोकार्पण

28 दिसंबर, 2025 को वामा साहित्य मंच द्वारा आयोजित भव्य समारोह में प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती ज्योति जैन के नवीन काव्य-संग्रह 'दुनिया काठ की' का विमोचन किया गया। यह लेखिका की 17वीं पुस्तक है, जिसमें 51 कविताओं के माध्यम से जीवन, स्मृति, परंपरा और मानवीय संवेदनाओं का चित्रण है। मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के सचिव, डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने कृति को संवेदनाओं से भरी हुई बताया। विशिष्ट अतिथि शिवना प्रकाशन के संस्थापक, श्री पंकज सुबीर ने संग्रह को हिंदी काव्य जगत् की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कहा। लेखिका ज्योति जैन ने अपनी रचनात्मक यात्रा साझा करते हुए संग्रह की वैचारिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। साहित्यकारों, पाठकों और शहर के गणमान्य नागरिकों की गरिमामय उपस्थिति ने आयोजन को विशेष बना दिया।

साभार : शिवना प्रकाशन

पुरस्कार समारोह तथा पुस्तक-लोकार्पण

7 दिसंबर, 2025 को हिंदी भवन, नई दिल्ली में विधि भारती परिषद् के 32वें स्थापना वर्ष के अवसर पर पुरस्कार समारोह तथा पुस्तक-लोकार्पण का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति डॉ. संगीता ढींगरा सहगल थीं। विशिष्ट अतिथि राज्य सभा की पूर्व सांसद और संसदीय हिंदी परिषद् की अध्यक्षा श्रीमती सत्या बहिन, इंदौर में उच्चतर शिक्षा विभाग की अध्यक्षा और प्रतिष्ठित साहित्यकार, डॉ. मीनाक्षी स्वामी तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफ़ेसर और साहित्यकार प्रो. पूरन चंद टंडन थे। अध्यक्षता दिल्ली उच्च न्यायालय की पूर्व न्यायाधीश मंजू गोयल ने की। उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता डॉ. के. एस. भाटी ने स्वागत-भाषण दिया। डॉ. संगीता ढींगरा सहगल को 'राष्ट्रीय विधि भारती सम्मान' से अलंकृत किया गया। डॉ. मीनाक्षी स्वामी, डॉ. दिविक रमेश, डॉ. प्रवीण शर्मा, श्री सुभाष सेतिया, श्रीमती नीलम सेतिया, डॉ. अवनीश कुमार, डॉ. रीता शर्मा, डॉ. राजेश बत्रा एवं डॉ. रेणु बत्रा को 'राष्ट्र भारती सम्मान' प्रदान किया गया।

इस अवसर पर डॉ. संतोष खन्ना के काव्य-संग्रह 'दीप जला रखना तुम' का लोकार्पण हुआ, जिसका परिचय देते हुए डॉ. विवेक गौतम ने सारगर्भित उद्गार व्यक्त किए। श्री संतोष बंसल की पुस्तक 'बापू की हत्या के बाद लौह पुरुष' का विमोचन हुआ। इसका परिचय डॉ. शकुन्तला मित्तल ने दिया। डॉ. उषादेव के उपन्यास 'अमृता' का लोकार्पण हुआ, जिसका परिचय कवि अनुरागेंद्र निगम ने दिया। इसके अतिरिक्त डॉ. संतोष खन्ना द्वारा संपादित साझा कहानी-संग्रह 'अरुणोदय की नूतन किरणें' का विमोचन किया गया। इसकी संकल्पना पर श्री सुभाष सेतिया ने प्रकाश डाला। इसमें प्रकाशित दो सर्वोत्कृष्ट कहानियों के लिए प्रतिभा चौहान एवं डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडेय (नीदरलैंड) को 'राष्ट्रीय नरेंद्र देवश्री स्मृति पुरस्कार' प्रदान किया गया। शेष छब्बीस कहानीकारों को कहानी के क्षेत्र में अवदान के लिए 'मन्नू भंडारी कहानी सम्मान' से अलंकृत किया गया। इस पुस्तक

के आवारण के लिए वीरोनिका कालरा को भी सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. के. एस. भाटी और रणविजय राव ने किया। डॉ. शकुंतला कालरा ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

साभार : निर्दलीय समाचार पत्र

अशोक कुमार पांडेय की पुस्तक 'बीसवीं सदी के तानाशाह' का लोकार्पण

लेखक-इतिहासकार अशोक कुमार पांडेय की नई किताब 'बीसवीं सदी के तानाशाह' का लोकार्पण 20 दिसम्बर, 2025 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में हुआ। राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक के लोकार्पण कार्यक्रम की अध्यक्षता सुपरिचित इतिहासकार प्रोफ़ेसर एस. इरफ़ान हबीब ने की। कार्यक्रम में वक्ता के रूप में गिरिराज किराडू, राकेश पाठक और उज्ज्वल भट्टाचार्य उपस्थित रहे तथा संचालन शोभा अक्षर ने किया। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने पुस्तक की विषयवस्तु, उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और समकालीन प्रासंगिकता पर अपने विचार रखे।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रोफ़ेसर एस. इरफ़ान हबीब ने कहा, आज के माहौल में अशोक कुमार पांडेय जैसे लेखकों की भूमिका बेहद महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि वे इतिहास को अकादमिक दायरों से बाहर निकालकर आम लोगों की भाषा में एक जगह समेटकर सामने रखते हैं।

उज्ज्वल भट्टाचार्य के अनुसार ऐतिहासिकता में हमेशा प्रासंगिकता होती है, लेकिन हर प्रासंगिकता में ऐतिहासिकता हो, यह ज़रूरी नहीं है। तानाशाह केवल आर्थिक संकट से नहीं, बल्कि अस्मिता और पहचान के संकट से भी जन्म लेते हैं।

गिरिराज किराडू ने कहा कि यह किताब स्टोरीटेलिंग के अंदाज़ में लिखी गई है, जिसे हर पाठक के लिए पढ़ना और समझना आसान है।

राकेश पाठक ने बताया कि यह किताब बताती है कि तानाशाही किस तरह लोगों के खून पर खड़ी होती है और कैसे हर तानाशाह अपने शासन को हिंसा और दमन के ज़रिये बनाए रखता है।

लेखक अशोक कुमार पांडेय ने अपने वक्तव्य में बताया कि तानाशाही क्या होती है, वह कैसे पैदा होती है और वह अंतत: क्या नष्ट करती है; इसे समझना ज़रूरी है।

साभार : राजकमल प्रकाशन समूह की वेबसाइट

'भारत एक विचार-परम्परा' का विमोचन

15 दिसंबर, 2025 को हिंदी के चर्चित लेखक-चिंतक प्रेम कुमार मणि की नई पुस्तक 'भारत एक विचार-परम्परा' का विमोचन पटना पुस्तक मेले में इतिहासकार प्रोफ़ेसर ओ.पी. जायसवाल और डी.एन. गौतम ने किया। राजकमल प्रकाशन से आई यह किताब इतिहास और संस्कृति पर केन्द्रित है। कार्यक्रम का संचालन प्रोफ़ेसर कुमार वरुण ने किया। प्रेम कुमार मणि ने कहा कि भारतीय संस्कृति, इतिहास और विचार परम्परा को लेकर मेरे अंतर्मन में जो सवाल उमड़ते थे, खुद को उन्हीं सवालों के जवाब देते हुए मैंने इस पुस्तक की रचना की है। भारतीय संस्कृति और इतिहास पर आधारित करीब सात सौ पृष्ठों की इस वैचारिक पुस्तक में भारत को समझने की एक सरल कोशिश मणि ने की है। यह पुस्तक भारत को केवल एक भू-भाग या राजनीतिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक सतत विचारधारा के रूप में देखती है।

साभार : बिहार इन फ़ोकस

'अंतिम दिन' – लिथुआनियाई उपन्यास का हिंदी संस्करण

30 अक्टूबर, 2025 को नई दिल्ली के रवींद्र भवन में साहित्य अकादेमी और लिथुआनिया गणराज्य के दूतावास के संयुक्त प्रयास से लिथुआनियाई-यूक्रेनी लेखक जारोस्लावस मेलनिकस के उपन्यास 'द लास्ट डे' का हिंदी अनुवाद 'अंतिम दिन' का विमोचन समारोह आयोजित हुआ। यह आयोजन साहित्य अकादेमी की विश्व साहित्य परियोजना के तहत हुआ, जिसका उद्देश्य वैश्विक साहित्य को हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराना और अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक संवाद को प्रोत्साहित करना है।

उपन्यास मानव अस्तित्व, पहचान, सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक विविधता जैसे गहन विषयों की पड़ताल करता है। लेखक जारोस्लावस मेलनिकस लिथुआनियाई-यूक्रेनी साहित्यिक क्षेत्र के प्रख्यात लेखक हैं, जिनकी रचनाएँ दार्शनिक और विचारोत्तेजक होती हैं। इसका हिंदी अनुवाद डॉ. पूनम तिवारी द्वारा किया गया है, जिससे भारतीय पाठक इसे अपनी मातृभाषा में सहजता से पढ़ सकते हैं।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने इस अवसर को हिंदी साहित्य के लिए ऐतिहासिक बताया और कहा कि यह पहला अवसर है जब कोई लिथुआनियाई कथा हिंदी में अनूदित हुई है।

समारोह में लिथुआनिया गणराज्य की राजदूत दियाना मित्सकेविचेने उपस्थित रहीं। उन्होंने भारत और लिथुआनिया के बीच साहित्यिक और सांस्कृतिक सहयोग के महत्त्व पर प्रकाश डाला और कहा कि '*अंतिम दिन*' का हिंदी संस्करण इस सहयोग का प्रतीक है।

साभार : https://currentaffairs.adda247.com/sahitya-akademi-launches-hindi-edition-of-lithuanian-novel-the-last-day-as-antim-din/?utm

सम्मान एवं पुरस्कार

'शहीद बिका नायक की खोज' उपन्यास को 'श्री अमरनाथ पाण्डेय स्मृति सम्मान'

3 नवंबर, 2025 को केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रयागराज के सभागार में त्रिवेणी

ग्रामोद्योग उत्थान समिति एवं लोकरंजन प्रकाशन द्वारा साहित्यकार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें श्री दिनेश माली के उपन्यास 'शहीद बिका नायक की खोज' को श्री अमरनाथ पाण्डेय स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. ललित कुमार त्रिपाठी ने की। मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान की प्रधान संपादक डॉ. अमिता दुबे रहीं। विशिष्ट अतिथि डॉ. एच. पी. पाण्डेय रहे। निर्णायक मंडल में लखनऊ की मधुश्री शुक्ला, प्रो. रवि मिश्र और डॉ. कल्पना वर्मा सम्मिलित थे।

मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि ने स्वस्थ समाज के निर्माण में साहित्य की भूमिका पर बल दिया। अध्यक्ष महोदय ने विश्वविद्यालय की तरफ़ से आयोजक रंजन पाण्डेय और डॉ. आदित्य नारायण सिंह का सम्मान किया।

महानदी कोलफ़ील्ड्स लिमिटेड, कनिहा, तालचेर के महाप्रबंधक (संचालन), प्रसिद्ध लेखक दिनेश कुमार माली को इस सम्मान में 5100 की धनराशि के अतिरिक्त अंगवस्त्र, स्मृति-चिह्न, गोल्ड मेडल एवं मुक्ताहार से सुशोभित किया गया। कार्यक्रम का संचालन लेखक रंजन पाण्डेय ने किया।

आभार : श्री दिनेश माली

ओडिशा के महामहिम राज्यपाल के कर-कमलों से सम्मानित हुए साहित्यकार दिनेश माली

विश्व हिंदी परिषद् की ओडिशा शाखा द्वारा 2 नवंबर, 2025 को ओडिशा के महामहिम राज्यपाल के निवास स्थान 'राज भवन' के अभिषेक हॉल में आयोजित 'सम्मान समारोह एवं कवि-सम्मेलन' के अवसर पर ओडिशा के राज्यपाल डॉ. हरिबाबू कंभमपति के कर-कमलों से हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री दिनेश कुमार माली को 'भाषा संरक्षक गौरव सम्मान-2025' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विश्व हिंदी परिषद् के अध्यक्ष पद्मश्री, पद्मभूषण श्री यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद, महासचिव डॉ. विपिन कुमार, उपाध्यक्ष देवी प्रसाद मिश्रा, राष्ट्रीय परामर्शदाता श्री प्रतीक प्रजापति, राज्यसभा सांसद सुश्री ममता मोहंता एवं ओडिशा प्रदेश अध्यकाश श्री विक्रमादित्य सिंह उपस्थित थे।

साभार : श्री दिनेश माली

सिंगापुर में वार्षिक पुरस्कार समारोह 'हिंदी सेवा सम्मान'

सिंगापुर में हिंदी-शिक्षण की अलख जगाने वाले हिंदी सोसायटी सिंगापुर द्वारा जुलाई मास में आयोजित वार्षिक पुरस्कार समारोह में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया था और नवंबर मास में दीर्घसेवी शिक्षिकाओं को 'हिंदी सेवा सम्मान' समारोह में सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान यह रेखांकित किया गया कि हिंदी शिक्षकों के सहयोग से वर्ष 2025 में सिंगापुर में हिंदी भाषा एक जीवंत और निरंतर विकसित होती हुई भाषा के रूप में स्थापित की गयी।

श्रीमती आराधना झा श्रीवास्तव की रिपोर्ट

हरिकृष्ण देवसरे बालसाहित्य पुरस्कार 2025

20 दिसंबर, 2025 को साहित्य अकादेमी के सभागार में सुप्रसिद्ध कथाकार एवं संवेदनशील उपन्यासकार श्री समीर गांगुली और लेखिका श्रीमती मीनू त्रिपाठी को 'हरिकृष्ण देवसरे बालसाहित्य पुरस्कार 2025' प्रदान किया गया।

यह पुरस्कार श्रीमती मीनू त्रिपाठी को उनकी पुस्तक 'हरियाली की ओर' और श्री समीर गांगुली को उनकी पुस्तक 'मिशन ग्रीन वॉर' के लिए दिया गया। दोनों पुस्तकें बाल पाठकों के मन में पर्यावरण के प्रति संवेदना जागृत करने का कार्य सफलतापूर्वक करती हैं। इस अवसर पर, हिंदी बाल साहित्य में समग्र योगदान के लिए वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार श्री दिविक रमेश को विशेष सम्मान से अलंकृत किया गया।

साभार : bachchaa.com

इफ़को साहित्य सम्मान 2025

30 दिसंबर, 2025 को नई दिल्ली के कमानी सभागार में आयोजित समारोह में उर्वरक क्षेत्र की प्रमुख सहकारी संस्था इफ़को ने वर्ष 2025 का 'इफ़को साहित्य सम्मान' वरिष्ठ कथाकार मैत्रेयी पुष्पा को साहित्य, संस्कृति और सृजनशील अभिव्यक्ति के प्रति उनके योगदान के लिए प्रदान किया। साथ ही, 'इफ़को युवा साहित्य सम्मान 2025' लेखिका अंकिता जैन को दिया गया। अंकिता जैन को यह सम्मान उनकी चर्चित कृति 'ओ रे! किसान' के लिए दिया गया। इफ़को कै चेयरमेन श्री दिलीप संघानी ने दोनों लेखिकाओं को सम्मानित किया। समारोह में मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'गुनहगार' पर आधारित नाट्य-प्रस्तुति भी हुई।

इस सम्मान समारोह में साहित्य, शिक्षा और कला-जगत से जुड़ी कई प्रमुख हस्तियाँ मौजूद रहीं। कार्यक्रम के दौरान मैत्रेयी पुष्पा के साहित्यिक योगदान और अंकिता जैन की युवा लेखन-यात्रा की सराहना की गई।

साभार : टाइम्स नाव नवभारत

जावेद अख्तर को प्रथम एसओए साहित्य सम्मान

25 नवंबर 2025 को ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर स्थित 'शिक्षा 'ओ' अनुसंधान विश्वविद्यालय' में तृतीय एसओए साहित्यिक उत्सव का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन समारोह के अवसर पर प्रख्यात कवि, गीतकार और पटकथा लेखक जावेद अख्तर को वर्ष 2025 का प्रथम एसओए साहित्य सम्मान प्रदान किया गया।

यह सम्मान भारतीय साहित्य और सांस्कृतिक चेतना में उनके दीर्घकालिक और उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। पुरस्कार में प्रशस्तिपत्र, शाल, देवी सरस्वती की रजत प्रतिमा तथा सात लाख रुपये की राशि शामिल है।

उद्घाटन-समारोह के मुख्य अतिथि ओडिशा के राज्यपाल डॉ. हरि बाबू कम्भम्पाटी थे। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि आधुनिक समय में संचार, सृजनशीलता और मानवीय संबंधों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रभावित कर रही है। मानवीय संवेदनाओं की गहराई, नैतिक विवेक और कल्पना-शक्ति का स्थान कोई तकनीक नहीं ले सकती।

इस अवसर पर जावेद अख्तर ने सम्मान प्राप्त करते हुए साहित्य, भाषा और संस्कृति के महत्त्व पर अपने विचार साझा किए। उत्सव का विषय "संस्कृति, सृजनशीलता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता" रखा गया, जिसमें साहित्य और मानवीय रचनात्मकता पर तकनीकी नवाचारों के प्रभाव पर विचार-विमर्श किया गया। इस साहित्यिक उत्सव में देश के विभिन्न भागों से आए लगभग एक सौ से अधिक कवि, लेखक, उपन्यासकार, रंगकर्मी और मीडिया प्रतिनिधि सहभागी रहे। सभी ने दो दिनों में आयोजित लगभग तीस सत्रों में अपने विचार प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ़ेसर प्रदीप्त कुमार नंदा ने की। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के पूर्व सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान डॉ. गायत्रीबाला पांडा की पुस्तक 'दयानदी' का अंग्रेज़ी अनुवाद तथा संस्थान द्वारा प्रकाशित कुछ ग्रंथों का लोकार्पण किया गया।

साभार : शिक्षा 'ओ' अनुसंधान विश्वविद्यालय की आधिकारिक सूचना, समाचार रिपोर्टें एवं राष्ट्रीय मीडिया

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा में विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया

सितंबर 2025 परीक्षा में उत्तीर्ण छात्राओं को विद्यालय के प्रधानाचार्य महोदय, प्रचारक और अध्यापक गण द्वारा प्रमाण-पत्र दिए गए हैं। प्रधानाध्यापिका ने बच्चों को संदेश देते हुए कहा कि "दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा भारत की एक प्रमुख शिक्षण एवं सांस्कृतिक संस्था है, जिसकी स्थापना महात्मा गांधी की प्रेरणा से 1918 में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य दक्षिण भारत के राज्यों - तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना था। हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में सशक्त बनाने की दिशा में यह संस्था एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ रही है।"

साभार : दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा

मिथिलाक्षर–प्रवीण सम्मान समारोह 2025

9 नवंबर 2025 को हिंदी भवन, नई दिल्ली में 'मिथिलाक्षर–प्रवीण सम्मान समारोह' का आयोजन हुआ। यह सम्मान भाषा, संस्कृति और साहित्य में निरंतर सक्रिय योगदान को मान्यता देने के उद्देश्य से दिया जाता है।

वर्ष 2025 के "मिथिलाक्षर–प्रवीण सम्मान" से निम्न उल्लेखनीय विद्वानों और साहित्यकारों को सम्मानित किया गया :

- मधु चौधरी – भाषा और सांस्कृतिक संरक्षण में योगदान के लिए
- पूनम झा – क्षेत्रीय भाषा अध्ययन तथा साहित्यिक कार्यों के लिए
- साधना झा – भाषा संवर्धन और शिक्षण के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए
- रीना झा – भाषा संस्कृति के प्रचार एवं शोध-कार्य के लिए।

कार्यक्रम में भाषण, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ और शोध-विमर्श के माध्यम से हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं के सहयोगात्मक समन्वय को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया।

स्रोत: "मिथिलाक्षर प्रवीण सम्मान समारोह" आयोजन विवरण, हिंदी भवन, नई दिल्ली, 9 नवंबर 2025

'आजतक साहित्य जागृति सम्मान'

23 नवंबर, 2025 को दिल्ली के मेजर ध्यानचंद राष्ट्रीय स्टेडियम में साहित्य आजतक 2015 के दूसरे दिन राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश ने अलग-अलग श्रेणियों में 'आजतक साहित्य जागृति सम्मान' प्रदान किया। देश की राजधानी दिल्ली में साहित्य आजतक 2025 के दूसरे दिन कई दिग्गज हस्तियों ने शिरकत की।

निम्नलिखित लेखकों को उनकी कृतियों के लिए अलग-अलग श्रेणियों में 'आजतक साहित्य जागृति सम्मान' प्रदान किए गए :-

- रिंकी झा ऋषिका (युवा वर्ग-महिला) को 'नदी घाटी सभ्यता/मैथिली' के लिए
- अमित तिवारी (युवा वर्ग-पुरुष) को 'बंकू' उपन्यास के लिए
- अमोल पालेकर और संध्या गोखले को 'अमानत एक स्मृतिकोष/मराठी-हिंदी-अंग्रेज़ी' के लिए

विक्रम संपत (पॉप्युलर) को 'टीपू सुल्तान : द सागा ऑफ़ द मैसूर इंटररेग्नम (1760-1799) के लिए

- मालिनी अवस्थी (महिला वर्ग) को 'चंदन किवाड़' के लिए
- गौहर रजा (पुरुष वर्ग) को 'मिथकों से विज्ञान तक; जीवन और ब्रह्मांड से रहस्य, विज्ञान और धर्म का तालमेल' के लिए
- लेखिका चित्रा मुद्गल को 'आजतक साहित्य जागृति लाइफ़टाइम अचीवमेंट सम्मान' से नवाज़ा गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश ने कहा कि देश को बौद्धिक रूप से संपन्न करने वाली प्रतिभाओं के सम्मान

का साक्षी बनना उनके लिए निजी तौर पर गर्व और संतोष का विषय है। उपराष्ट्रपति ने साहित्य आजतक को भारतीय भाषाओं का साहित्यिक महाकुंभ बताते हुए कहा कि उन्होंने अर्थशास्त्र का विद्यार्थी होने के बावजूद समाज को समझने का वास्तविक दृष्टिकोण साहित्य से पाया।

साभार : आजतक

श्रद्धांजलि

पद्मश्री प्रो. रामदरश मिश्र

हिंदी साहित्य के दिग्गज और 102 वर्षीय साहित्यकार प्रो. रामदरश मिश्र का 31 अक्टूबर, 2025 को निधन हो गया। 15 अगस्त, 1924 को गोरखपुर के डुमरी गाँव में जन्मे प्रो. रामदरश मिश्र ने बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से उच्च शिक्षा प्राप्त की। वे गुजरात में रहे और बाद में उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाया। उन्होंने कविता, कथा, आलोचना, उपन्यास, कहानी, यात्रावृत्तांत, निबंध सहित विभिन्न विधाओं में लेखन-कार्य किया है। वर्ष 2025 में साहित्य जगत् में अमूल्य योगदान के लिए उनको पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

उनके उपन्यासों में 'जल टूटता हुआ' और 'पानी के प्राचीर' शामिल हैं। 'बेरंग-बेनाम चिट्ठियाँ', 'पक गयी है धूप' और 'कंधे पर सूरज' उनकी प्रमुख साहित्यिक कृतियों में से हैं। प्रो. मिश्र ने अब तक 150 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। उनकी पुस्तकों को कई विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है। उनका पहला काव्य-संग्रह 'पथ के गीत' 1951 में प्रकाशित हुआ, लेकिन इसके 10 वर्ष पहले से उन्होंने कविताएँ लिखनी आरंभ कर दी थीं। उनकी पहली कविता - 'सरयू', 'पारीण' पत्रिका के जनवरी 1941 के अंक में प्रकाशित हुई थी। उनके 30 से अधिक कविता-संग्रह प्रकाशित हैं। उन्होंने हिंदी आलोचना का इतिहास लिखा। हिंदी साहित्य में उनके योगदान को हिंदी आलोचना के स्तंभ के रूप में जाना जाता है। उन्होंने समय-समय पर ललित निबंध, डायरी व संस्मरण भी लिखे हैं। भगवतीचरण वर्मा के लेखन पर उनकी आलोचनात्मक लेखन की हिंदी जगत् में खूब प्रशंसा हुई। उनके 15 उपन्यास और 30 कहानी-संग्रह प्रकाशित हैं। उनकी आत्मकथा 'सहचर है समय' को भी हिंदी के पाठकों ने खूब पसंद किया। उनकी रचनाओं का गुजराती, मराठी, कन्नड़, मलयालम आदि भाषाओं में अनुवाद हुआ है। गीत, नई कविता, छोटी कविता, लंबी कविता यानी कि कविता की कई शैलियों में उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा ने अपनी प्रभावशाली अभिव्यक्ति के साथ-साथ गज़ल में भी उन्होंने अपनी सार्थक उपस्थिति रेखांकित की।

उनको 'सरस्वती सम्मान', 'भारत भारती सम्मान', 'शलाका सम्मान', 'व्यास सम्मान', 'उदयराज सिंह स्मृति सम्मान', 'विश्व हिंदी सम्मान', 'शान ए हिंदी खिताब', 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन सम्मान' समेत अनेकों सम्मान प्राप्त हुए हैं।

साभार : जागरण / विकिपीडिया

श्री विनोद कुमार शुक्ल

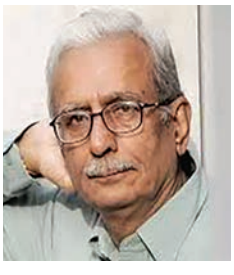

23 दिसंबर, 2025 को हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल का 89 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। हिंदी साहित्य में उनके अनूठे और सादगी-भरे लेखन के लिए उन्हें जाना जाता है। शुक्ल ने उपन्यास एवं कविता विधाओं में साहित्य-सृजन किया है। 1 जनवरी, 1937 को भारत के राज्य मध्यप्रदेश (अब छत्तीसगढ़) के राजनांद गाँव में जन्मे शुक्ल जी ने प्राध्यापन को रोज़गार के रूप में चुनकर अपना पूरा ध्यान साहित्य-सृजन में लगाया। विनोद कुमार शुक्ल जी हिंदी कविता के वृहत्तर परिदृश्य में अपनी विशिष्ट भाषिक बनावट और संवेदनात्मक गहराई के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने समकालीन हिंदी कविता को अपने मौलिक कृतित्व से सम्पन्नतर बनाया है और इसके लिए वे पूरे भारतीय काव्य परिदृश्य में अलग से पहचाने जाते हैं। वे कवि होने के साथ-साथ शीर्षस्थ कथाकार भी हैं। उनके उपन्यासों ने भी हिंदी में एक मौलिक भारतीय उपन्यास की संभावना को राह दी है। उन्होंने एक साथ लोक आख्यान और आधुनिक मनुष्य की अस्तित्वमूलक जटिल आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति को समाविष्ट कर एक नये कथा-ढाँचे का आविष्कार किया है। अपनी विशिष्ट भाषिक बनावट, संवेदनात्मक गहराई, उत्कृष्ट सृजनशीलता से श्री शुक्ल ने भारतीय वैश्विक साहित्य को अद्वितीय रूप से समृद्ध किया है।

उनका पहला कविता-संग्रह 1971 में 'लगभग जय हिन्द' नाम से प्रकाशित हुआ। 1979 में 'नौकर की कमीज़' नाम से उनका उपन्यास आया, जिसपर फ़िल्मकार मणिकौल ने इसी नाम से फ़िल्म भी बनाई। शुक्ल के दूसरे उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। सन् 2024 में उन्हें भारतीय साहित्य के सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उनको 'गजानन माधव मुक्तिबोध फ़ेलोशिप', 'रज़ा पुरस्कार', 'शिखर सम्मान', 'राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान', 'दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान', 'हिंदी गौरव सम्मान', 'मातृभूमि पुरस्कार' तथा साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के सर्वोच्च सम्मान 'महत्तर सदस्य' से नवाज़ा गया है।

साभार : विकिपीडिया

सुश्री कमला रामलखन

23 नवंबर, 2025 को त्रिनिदाद एवं टोबैगो की हिंदी सेविका सुश्री कमला रामलखन का निधन हो गया। वे एक प्रतिष्ठित हिंदी विदुषी, शिक्षिका और संस्था की पूर्व कार्यकारी सदस्य थीं। सुश्री रामलखन ने फ़ाउंडेशन और हिंदी समुदाय की सेवा निष्ठा और गरिमा के साथ की। हिंदी भाषा-शिक्षण और प्रचार के प्रति उनका जीवनपर्यंत समर्पण रहा। उन्होंने त्रिनिदाद एवं टोबैगो के सांस्कृतिक ताने-बाने को मज़बूत किया। अपनी विद्वता, मार्गदर्शन और नेतृत्व के माध्यम से उन्होंने छात्रों की कई पीढ़ियों को हिंदी की सुंदरता और इसके मूल्यों, सम्मान, अनुशासन और ज्ञान के प्रति भक्ति को अपनाने के लिए प्रेरित किया। एक कार्यकारी सदस्य के रूप में, उन्होंने त्रिनिदाद एवं टोबैगो की बहुसांस्कृतिक समाज में हिंदी को जीवित भाषा के रूप में संरक्षित और प्रचारित करने के फ़ाउंडेशन के मिशन में सार्थक योगदान दिया। उनकी सूझ-बूझ, करुणा और अथक कार्य नीति ने संस्थान और उनके साथ कार्य करने वाले सभी लोगों पर अमिट छाप छोड़ी। सुश्री रामलखन को न केवल उनकी अकादमिक उत्कृष्टता के लिए याद किया जाएगा, बल्कि उनकी विनम्रता, दयालुता और गहन सेवा भाव के लिए भी याद किया जाएगा। उनको भारतीय उच्चायोग से भी सम्मान प्राप्त हुआ है। उनकी हिंदी पुस्तकें हिंदी सीखनेवालों में काफ़ी लोकप्रिय हैं। त्रिनिदाद एवं टोबैगो में हिंदी को लोकप्रिय बनाने में उनके सार्थक प्रयासों के दृष्टिगत भोपाल, भारत में 2015 में आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन में उनको 'विश्व हिंदी सम्मान' से विभूषित किया गया था।

आभार : श्री चंका सीताराम, अध्यक्ष, हिंदी फ़ाउंडेशन, त्रिनिदाद एवं टोबैगो / भारतीय उच्चायोग, त्रिनिदाद एवं टोबैगो का फ़ेसबुक

पद्मश्री श्री दया प्रकाश सिन्हा

7 नवंबर, 2025 को हिंदी साहित्य के वरिष्ठ नाटककार और पद्मश्री से सम्मानित श्री दया प्रकाश सिन्हा का निधन हो गया। 91 वर्षीय सिन्हा को उनके नाटक 'सम्राट अशोक' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार-2021 के लिए चुना गया था। उनके निधन की खबर से साहित्य और रंगमंच जगत् में शोक की लहर दौड़ गई है। वरिष्ठ लेखक दया प्रकाश हमेशा लिखते-पढ़ते रहते थे। वे पिछले दिनों में कवि रहीम दास के जीवन पर आधारित लेख लिख रहे थे।

1935 में उत्तर प्रदेश के कासगंज में जन्मे सिन्हा एक अवकाशप्राप्त आईएएस अधिकारी थे, जिन्होंने हिंदी साहित्य, रंगमंच और नाट्य निर्देशन में अमूल्य योगदान दिया। वे उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी और ललित कला अकादमी के अध्यक्ष रहे, साथ ही फ़िजी में भारत के प्रथम सांस्कृतिक सचिव के रूप में सेवा दी। कला और साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें संगीत नाटक अकादमी आवर्ड, लोहिया सम्मान और हिंदी अकादमी का साहित्यकार सम्मान प्राप्त हो चुका है।

1993 में भारत भवन, भोपाल के निदेशक पद से सेवानिवृत्ति के बाद वे साहित्य सृजन में सक्रिय रहे।

अपने जीवन-काल में सिन्हा जी ने एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखीं, जिनमें से अधिकांश नाटक विधा पर ही थीं। उनकी अद्यतन प्रकाशित नाट्यकृतियाँ हैं - 'साँझ-सवेरा', 'मन के भँवर', 'अपने-अपने दाँव', 'दुश्मन', 'मेरे भाई मेरे दोस्त', 'इतिहास चक्र', 'ओह अमेरिका', 'कथा एक कंस की', 'सादर आपका', 'सीढ़ियाँ', 'इतिहास', 'रक्त-अभिषेक'।

सिन्हा जी ने केवल नाटक लिखे ही नहीं अपितु उन्हें मंचित भी करवाया। यही नहीं अपने कुछ नाटकों में उन्होंने प्रमुख पात्र की भूमिका भी निभायी और सशक्त अभिनय से दर्शकों को प्रभावित किया।

साभार : जागरण / विकिपीडिया

नीना बधवार

17 अक्टूबर, 2025 को ऑस्ट्रेलिया की पत्रकार और हिंदी शिक्षिका नीना बधवार का देहांत हो गया। वे सिडनी के भारतीय समुदाय को जोड़ने वाली एक महत्त्वपूर्ण कड़ी थीं। 1987 में अग्रणी मीडिया मंच *द इंडियन डाउन अंडर* की स्थापना से लेकर हिंदी शिक्षिका के रूप में स्वयंसेवा करने तक, और एक कवयित्री तथा नाटककार से लेकर उभरते कलाकारों की मार्गदर्शक बनने तक, उनके कार्यों ने पीढ़ियों को जोड़ा और ऐसे नेटवर्क बनाए, जो आज भी सशक्त रूप से कायम हैं।

आजीवन मित्र माला मेहता ने याद करते हुए कहा - "उनके लिए पचास या सौ लोगों के लिए भोजन तैयार करना कभी भी ज्यादा नहीं था। बाद में उन्होंने अपने घर में एक बड़ा आयोजन स्थल भी बना लिया - उस समय हमारे पास महत्त्वपूर्ण अवसरों को मनाने के लिए न तो व्यावसायिक हॉल था और ना ही कैटरिंग की सुविधा। बधवार परिवार लोगों को घर बुला लेता था और भोजन की व्यवस्था करता था।

श्रीमती माला मेहता ने हिंदी विद्यालय शुरू किया, तो नीना बधवार स्वयंसेवक के रूप में जुड़ गईं। अंततः उन्होंने एचएससी स्तर तक हिंदी पढ़ाई। भाषा के प्रति उनका प्रेम उन्हें सिडनी विश्वविद्यालय तक भी ले गया, जहाँ उन्होंने कंटिन्यूइंग एजुकेशन कार्यक्रम में हिंदी का अध्यापन किया। उनकी कविताएँ और नाटक उनकी रचनात्मकता के सशक्त प्रमाण हैं। वे बहुत बड़ी विदुषी थीं। उन्हें पढ़ने का बहुत शौक था और विशेष रूप से हिंदी भाषा के प्रति गहरा लगाव था। वे शिक्षित परिवार से थीं, उनके माता-पिता भी लेखक और शिक्षक थे। वे बहुत संवेदनशील, सौम्य स्वभाव की थीं।

साभार : इंडियन लिंक

अंतरराष्ट्रीय हिंदी गीत-लेखन प्रतियोगिता 2025

विश्व हिंदी सचिवालय ने वर्ष 2025 में 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी गीत-लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया था। प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार हैं :

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

प्रधान संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
वरिष्ठ सहायक संपादक : श्री प्रकाश वीर
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन : (230) 660 0800
ई-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक : www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/

संपादकीय

विश्व भर में रेडियो पर प्रसारित हिंदी के कार्यक्रम

संचार माध्यमों में रेडियो का प्रमुख स्थान है। पिछली अर्द्ध शताब्दी के अंतर्गत सारे विश्व में रेडियो पर नित नए चैनल उभरते रहे हैं, जो हिंदी की मधुर ध्वनियों को सामान्य जन के कानों तक पहुँचाने में सफल हुए हैं। जिन देशों में रेडियो पर हिंदी के कार्यक्रम सुविचारित और सुव्यवस्थित ढंग से प्रसारित होते हैं, वहाँ प्रतिदिन रेडियो पर हिंदी सुनकर अहिंदी भाषी भी अनायास हिंदी सीख लेते हैं। वे भले ही हिंदी पढ़ और लिख नहीं पाते हैं, पर रेडियो द्वारा हिंदी से परिचित हो जाते हैं और धीरे-धीरे इस भाषा को अपनाकर इसका प्रयोग करने लगते हैं। रेडियो ही वह सशक्त साधन है, जिसने हिंदी को लोकप्रिय बनाकर उसके वैश्विक प्रचार में अद्वितीय योगदान दिया है।

सन् 1927 में भारत में रेडियो प्रसारण की शुरुआत हुई, जिसका राष्ट्रीयकरण करके 'भारतीय प्रसारण सेवा' और आगे चलकर 'आकाशवाणी' नाम दिया गया। समाचार बुलटीन से लेकर वार्ता, साक्षात्कार, फ़ीचर, डॉक्यूमेंट्री, हास्य-प्रहसन, वाद-विवाद, नाटक, कहानी, कविता, गीत-संगीत के अतिरिक्त स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, खेल-कूद, परिवार-कल्याण आदि विषयों पर आकाशवाणी के कार्यक्रम हिंदी में प्रसारित होते हैं। देश के शहरों और गाँवों में हिंदी को पहुँचाकर आकाशवाणी भाषाई विविधता वाले भारतीय समाज को एक सूत्र में बाँधने का कार्य कर रहा है। भारत के क्षेत्रीय स्टेशनों तथा स्थानीय व निजी रेडियो पर भी हिंदी की गूँज जनमानस तक पहुँच रही है। रेडियो ने भारत में हिंदी को संपर्क भाषा बनाने और देशव्यापी मान्यता दिलाने में अहम भूमिका निभाई है।

19वीं शताब्दी में गिरमिट प्रथा के तहत भारतीय मज़दूर भारी संख्या में जिन देशों में बस गए, वहाँ रेडियो पर हिंदी के कार्यक्रमों की प्रधानता देखी गई। मॉरीशस में 1983 से लेकर आज तक एफ़.एम रेडियो, रेडियो प्लस, टॉप एफ़.एम, रेडियो वैन, रेडियो मॉरीशस, ताल एफ़.एम, बेस्ट एफ़.एम आदि कई रेडियो चैनल चालू किए गए हैं, जिनपर दिन-रात हिंदी के गीत, समाचार, विज्ञापन, उपयोगी सामाजिक सूचनाएँ तथा धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक व मनोरंजक कार्यक्रम प्रसारित होते रहते हैं। हिंदी के बहुत बड़े समुदाय की रुचि, पसंद और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ही हिंदी को रेडियो प्रसारण में महत्त्व दिया गया है। मॉरीशस के नामी हिंदी सेवक श्री सत्यदेव टेंगर लिखते हैं - "बारह लाख की आबादी में आठ लाख अर्थात् दो तिहाई जनसंख्या हिंदी और भोजपुरी के श्रोताओं की हो, तो कोई भी प्रसारण-केंद्र उसकी अवहेलना कैसे कर सकता है? बाज़ार का कानून लागू होते ही सहज हिंदी और सहज उर्दू ने मिलकर हिन्दुस्तानी के श्रोता स्वरूप बाज़ी मार दी है। गांधी जी ने जो सपना अविभाज्य भारत का देखा था, वह 'हिन्दुस्तानी' को लेकर मॉरीशस प्रसारण क्षेत्र में साकार हुआ।"

विश्व के अन्य प्रवासी देशों में भी रेडियो पर हिंदी उपस्थित रही। फ़िजी में 'रेडियो फ़िजी', 'रेडियो सरगम', 'रेडियो मिरजी', 'रेडियो बुला नमस्ते' आदि चैनलों ने हिंदी को जन-सामान्य से जोड़ा। डॉ. विमलेश कांति वर्मा लिखते हैं - "हिंदी को फ़िजी में जन-जन तक पहुँचाने में फ़िजी रेडियो का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ... फ़िजी रेडियो में हिंदी के कार्यक्रम दिन भर प्रसारित होते हैं, जिनमें हिंदी का समाचार, फ़िल्मी गाने तथा अन्य हिंदी के कार्यक्रम होते हैं।"

सूरीनाम में भी रेडियो पर हिंदी का व्यापक प्रयोग किया गया। प्रो. मोहन कांत गौतम लिखते हैं - "सूरीनामी प्रवासी भारतीयों का हिंदी के प्रति विश्वास और लगन मुट्ठियों में कैद नहीं है, वह स्वतंत्र है और जन समाज में समा गया है। ... पूरे दिन प्रवासी रेडियो पर भारतीय भजन, धार्मिक वार्ताएँ, फ़िल्मी गीत, धर्म और संस्कृति पर हिंदी ही में सब कुछ कहते हैं।"

दक्षिण अफ़्रीका के रेडियो स्टेशनों ने भी सुंदर ढंग से हिंदी का स्वरूप गढ़ा। प्रो. उषा देवी शुक्ला कहती हैं - "हमारे दो रेडियो स्टेशन हैं, जिनपर हिंदी सुनी जा सकती है। एक सरकारी रेडियो, 'लोटस एफ़.एम.', जो दक्षिण अफ़्रीका में प्रयुक्त पाँच भारतीय भाषाओं में संगीत प्रसारित करता है। ... दूसरा स्टेशन 'हिंदवाणी' है... हिंदी संप्रेषण में प्राणवत्ता लाने के लिए 'हिंदवाणी' के कार्यक्रमों में रामचरितमानस, कबीर, सूर और मीरा के पद तथा हनुमान चालीसा इत्यादि को स्थान दिया जाता है। विविध कार्यक्रमों में कम-से-कम पचास प्रतिशत हिंदी भाषा का प्रयोग अनिवार्य है।"

गिरमिट देशों में रेडियो पर हिंदी-शिक्षण के कार्यक्रम भी प्रसारित करने का प्रयास किया गया। त्रिनिडाड और टोबैगो में परिवारों को हिंदी सिखाने का दायित्व रेडियो ने बखूबी निभाया है। इस संदर्भ में डॉ. कुमार महाबीर लिखते हैं - "सन् 1998 में संगीत 106 एफ़.एम. पर फ़ेलिसिटी (प्राथमिक) हिंदू विद्यालय की प्रशिक्षित शिक्षिका सवी शिवशरण द्वारा निर्मित और प्रस्तुत हिंदी भाषा कार्यक्रम का आठ माह तक प्रसारण किया गया। इस कार्यक्रम का रोज़ाना एक बार प्रसारण किया जाता था। सोमवार से शुक्रवार तक शाम 5.30 बजे से 6.00 बजे तक यह कार्यक्रम प्रसारित होता था, जब परिवार के सभी सदस्य साथ बैठकर भोजन कर रहे हों। 103 एफ़.एम. पर हिंदी कार्यक्रम का शीर्षक था - 'हिंदी सीखें'।"

यह ध्यातव्य है कि उन देशों में भी हिंदी में रेडियो प्रसारण होते हैं, जहाँ भारतीय मूल के लोग व्यापार एवं व्यवसाय हेतु निवास कर रहे हैं। कनाडा में नवंबर 1987 से 'रिमझिम' हिंदी रेडियो कार्यक्रम चौबीसों घंटे चलता है। न्यूज़ीलैंड में 'रेडियो तराना' और 'एफ़.एम. रेडियो' विभिन्न वर्ग के लोगों का हर समय मनोरंजन करते हैं। श्रीलंका में 'रेडियो सिलोन' पर प्रसारित हिंदी गीत और बोलीवुड की खबरें जनता को लुभाती हैं। पाकिस्तान के लोग 'रेडियो पाकिस्तान' में प्रस्तुत हिंदी समाचार को रोज़ सुनते हैं। नेपाल के संदर्भ में डॉ. मृदुला शर्मा लिखती हैं - "अहिंदी मुल्क नेपाल की चौंकाने वाली बात यह भी है कि 'रेडियो नेपाल' की स्थापना होने पर हिंदी भाषा में वहाँ से प्रसारण भी हुआ था। ... प्रतिदिन हिंदी भाषा में समाचार का प्रसारण रेडियो नेपाल से होता है।"

यूरोप की ओर यदि दृष्टि डालें, तो ब्रिटेन में 'सनराइज़ रेडियो', 'रेडियो क्लब', 'एक्सैल रेडियो', 'किस्मत रेडियो' आदि चैनलों पर हिंदी के कार्यक्रम चाव से सुने जाते हैं। डॉ. राकेश बी. दुबे का कथन है - "संचार तथा सूचना-क्रांति ने जब अपना असर दिखाना शुरू किया, तब आधे घंटे के समाचार कार्यक्रम को पीछे छोड़कर आज हिंदी में चौबीसों घंटे के इतने समाचार चैनल हैं कि गिनती करना मुश्किल है। इस क्रांति का प्रभाव भारत तक ही सीमित नहीं रहा। उसकी आँच यहाँ ब्रिटेन सहित पूरी दुनिया में महसूस की गई और इस प्रकार हिंदी को एक नया रूप, नई ऊर्जा मिली।"

रेडियो ने मध्यपूर्वी देशों में भी हिंदी को जीवंत रखा। यू.ए.ई का उदाहरण देते हुए श्रीमती पूर्णिमा वर्मन लिखती हैं - "यू.ए.ई में एफ़.एम के कम-से-कम तीन ऐसे चैनल हैं, जिनपर चौबीसों घंटे हिंदी गाने, समाचार और अन्य कार्यक्रम सुने जा सकते हैं। दिन भर इनपर अंतरराष्ट्रीय उत्पादों के विज्ञापन सुने जा सकते हैं। यह इस बात का सबूत है कि यहाँ हिंदी खूब लोकप्रिय है।"

किन्हीं कारणों से अगर किसी देश के राष्ट्रीय रेडियो पर हिंदी के कार्यक्रम उपलब्ध नहीं है, तो हिंदी प्रेमी अन्य देशों के रेडियो चैनलों से इंटरनेट के माध्यम से जुड़कर हिंदी में कार्यक्रम सुनते हैं। इसका एक सुंदर उदाहरण श्री अमित जोशी देते हैं - "नॉर्वे में भारतीय आप्रवासियों का कोई अपना रेडियो नहीं है, लेकिन हिंदी प्रेमी 'बी.बी.सी. रेडियो', 'रेडियो डच वैले', 'ब्रिटिश रेडियो', 'सनराइज़' की हिंदी-सेवाओं का पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं।"

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ाने में रेडियो की भूमिका सर्वोपरि है। सरल, जीवंत और लोकप्रिय भाषा होने के साथ ही हिंदी में सार्वजनिक अभिव्यक्ति की क्षमता है। विश्व स्तर की इस भाषा को संचार का सशक्त माध्यम माना गया है। परिणामस्वरूप, समूचे विश्व में रेडियो पर हिंदी के कार्यक्रम बहुत बड़े पैमाने पर हो रहे हैं। हिंदी चैनल तीव्रतम गति से बढ़ रहे हैं। यह शुभ संकेत है कि भविष्य में भी रेडियो हिंदी भाषा को गतिशील बनाए रखेगा।

डॉ. माधुरी रामधारी

महासचिव